Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

તંત્રી
ચીમનલાલ ગોકળદાસ શાહ

વ ૯ અં. ૭]—મહાતીર્થ શંખેશ્વરના ભવ્ય જિનમંદિરની સુરમ્ય ભમતી [ક્રમાંક ૧૦૩

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अर्हम् ॥

अखिल भारतवर्षीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक मुनिसम्मेलन संस्थापित

श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समितिनुं मासिक मुखपत्र

श्री जैन सत्य प्रकाश

वर्ष ९	विक्रम सं. २००० : वीरनि. सं. २४७० : ई स १९४४	क्रमांक
अंक ७	चैत्र वदि ७ : श नि वा २ : ऐप्रील १५	१०३

विषय-दर्शन

१	'अनेकान्त' ना संपादकनुं श्वेताम्बरो प्रत्येनुं मानस : श्रीमान् बाबू बहादुरसिंहजी सिंघीनो पत्र		३३५
२	जीवायुष्पमाणकुलयं	: पू. आ. म. श्री. विजययतीन्द्रसूरिजी	: ३३९
३	भाषा-विशुद्धि	: पू मु. म. श्री. भद्रंकरविजयजी	: ३४१
४	जुहार अने जैनर	: प्रो. हीरालाल रसिकदास कापडिया	: ३५१
५	पंजाबमें जैनधर्म	: पू. पं. म. श्री. समुद्रविजयजी	: ३५५
६	योग-पावडी	: पू. मु. म. श्री पद्मविजयजी	: ३५८
७	श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समितिनो त्रण वर्षनो हिसाब		: ३६१
	समाचार		३६६ नी सामे

सूचना—आ मासिक दरेक अंग्रेजी महिनानी पंदरमी तारीखे प्रगट थाय छे तेथी सरनामाना फेरफारना खबर बारमी तारीखे समितिना कार्यालये पहोंचाडवा.

लवाजम—वार्षिक—बे रुपिया : छुटक चालु अंक-त्रण आना

मुद्रकः-मगनभाई छोटाभाई देसाई. श्री वीरविजय प्रीन्टींग प्रेस, सत्तापोल क्रोसरोड, पो. ओ. नं. ६-भक्तिमार्ग कार्यालय-अमदावाद. प्रकाशकः-चीमनलाल गोकळदास शाह. श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय, जेशिंगभाईनी वाडी, घीकांटा रोड-अमदावाद.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ वीराय नित्यं नमः ॥

श्री जैनसत्यप्रकाश

वर्ष ९] क्रमांक १०३ [अंक ७

'अनेकान्त'ना सम्पादकनुं

श्वेताम्बरो प्रत्येनुं मानस

[श्रीमान् बाबू बहादुरसिंहजी सिंघीनो 'अनेकान्त'ना सम्पादके प्रगट नहीं करेल पत्र]

'श्री जैन सत्य प्रकाश'ना क्रमांक ९८ अने ९९ मां, 'अनेकान्त' मासिकना सम्पादके **वीरशासन-जयन्ती-उत्सव** निमित्ते श्वेताम्बर जैनोमां जे विचित्र प्रकारनो प्रचार शरू कर्यो हतो ते संबंधी बे तंत्रीनोंधो अमे प्रगट करी हती, जे वाचकोना ध्यालमां हशे ज.

क्रमांक ९९ मांनी तंत्रीनोंधना अंतमां अमे लख्युं हतुं के-"श्वेताम्बर आगेवानो के विद्वानोना नामे 'अनेकान्त'ना सम्पादक जे प्रचार करी रह्या छे ते संबंधी सत्य पणु अमे समये प्रगट करी शकीशुं एवी आशा छे."

आजे, अमारा आ उपर्युक्त कथननुं समर्थन करतो एक पत्र अमे अहीं प्रगट करीए छीए. आ पत्र छे-कलकत्तानिवासी श्वेताम्बरीय आगेवान बाबू बहादुरसिंहजी सिंघीए गया सप्टेम्बर मासमां 'वीरसेवामन्दिर'ना अधिष्ठाता (जेओ 'अनेकान्त' मासिकना संपादक पणु छे) उपर लखेलो पत्र. आ पत्र 'अनेकान्त' मासिकमां प्रगट करवामां आवे एवी सूचना पणु श्रीमान् सिंघीजीए पोताना पत्रमां लखी छे. वळी **वीरशासन-जयन्ती-उत्सव** संबंधी श्वेताम्बरोमां पोताने मनगमतो प्रचार करवा माटे, 'अनेकान्त'ना सम्पादके जे केटलाक श्वेताम्बर आगेवानो के विद्वानोनां नामनो, मोटे भागे तेमनी अनुमति लीधा वगर ज, छूटथी उपयोग कर्यो छे, तेओमांना बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी पणु एक छे. आम होवा छतां 'अनेकान्त'ना सम्पादकने श्रीमान् सिंघीजीनो आ पत्र पोताना मासिकमां प्रगट करवानुं पसंद नथी पडयुं ए दुःखद छतां साची हकीकत छे.

'श्री जैन सत्य प्रकाश'ना क्रमांक ९८ मां प्रगट थयेली अमारी तंत्री-नोंध उपर टीका करतां 'अनेकान्त' मासिकना वर्ष ६ किरण ४ ना पृ. १४७ मां तेना सम्पादक आ श्वेताम्बर विद्वानो माटे लखे छे के—

"श्वेताम्बर समाजके जिन प्रमुख विद्वानों और प्रतिनिधि व्यक्तिओंको-बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी.....आदिको—सहयोग के लिये वीरसेवामन्दिरके प्रस्तावमें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चुना गया है वे क्या सम्पादकजीकी दृष्टिमें इतने असावधान विद्वान हैं जिनकी आंखों पर पट्टी बांधी जा सकती है?"

પોતાના પ્રચારમાં ઉપયોગી સમજીને જે શ્વેતામ્બર વિદ્વાનો કે આગેવાનો માટે '**अनेकान्त**'ના સમ્પાદકે ઉપરના શબ્દો લખ્યા છે તેમના માટે '**अनेकान्त**' ના સમ્પાદકના અંતરમાં કેવી અનુદાર ભાવના ભરી છે અને તેઓની આંખે પાટા બાંધવાનો તેઓ કેવો ખૂબીભર્યો પ્રયત્ન કરે છે તે આ પત્રથી બરાબર જણાઇ આવે છે. પોતાને ઉપયોગી લાગે ત્યાં લગી એમનાં નામો આગળ કરી ઉદારતાનો દેખાવ કરવો અને પોતાને અનુકૂળતા ન લાગે ત્યારે એમનો એક પત્ર પણ '**अनेकान्त**'માં પ્રગટ ન થવા દેવા જેટલી સંકુચિતતાનો આશ્રય લેવો–આવી '**अनेकान्त**'ના સંપાદકની બેધારી નીતિ આ પત્ર વાંચતાં સ્પષ્ટ જણાઇ આવે છે.

વિશેષ ખૂબીની વાત તો એ છે કે શ્રીમાન્ સિંધીજીનો આ પત્ર પોતાને મળ્યા પછી '**अनेकान्त**'ના સમ્પાદકે તે પ્રગટ ન કર્યો એટલું જ નહીં, પણ '**अनेकान्त**' માસિકના વર્ષ ૬ કિરણ ૨ માં '**वीर-शासनकी उत्पत्तिका समय और स्थान**' એ શીર્ષક એક લાંબી સમ્પાદકીય નોંધ પ્રગટ કરી અને તેમાં ભગવાન મહાવીરસ્વામીના પ્રથમ ઉપદેશ સંબંધી શ્વેતામ્બર માન્યતાનું પોતાને મનગમતી રીતે ખંડન કર્યું. એક રીતે તો તેમણે આ સારું જ કર્યું, જેથી તેમની તટસ્થતા કે ઉદારતાનો ભેદ શ્વેતામ્બર જનતા પામી શકી.

શ્રીમાન્ સિંધીજીએ લખેલ આ પત્ર વાંચતાં સહજ પ્રશ્ન થાય છે કે–શ્વેતામ્બર આગેવાનો અને વિદ્વાનોના સહકારની ઇચ્છા રાખવી, વગર પૂછયે તેમનાં નામ કમિટિમાં રાખવાં અને તેમાંથી કોઈ આગેવાન તે વિષે પોતાનો મત લખે તો તેને પોતાના પત્રમાં સ્થાન ન આપવું–આ હકીકત કોઇ પણ વિચારશીલ અને નિર્ભય જૈન સમ્પાદકને શોભે ખરી?

અમને ખાતરી છે કે શ્રીમાન્ સિંધીજીનો આ પત્ર વાંચ્યા પછી '**अनेकान्त**' ના સમ્પાદક તરફથી શ્વેતામ્બરોમાં કરવામાં આવતા પ્રચારની વિચિત્રતા સંબંધી જેમના દિલમાં થોડી પણ શંકા હશે તે દૂર થઈ જશે અને '**अनेकान्त**'ના સમ્પાદકનું અંતર કેટલું બધું એકપક્ષી છે તે સ્પષ્ટ રીતે સમજી શકાશે.

આ પ્રસંગે એક વાત એ પણ સમજવા જેવી છે કે–'**अनेकान्त**'ના સમ્પાદક શ્રી. જુગલકિશોરજી મુખ્તાર જે '**तिलोयपन्नत्ति**' ગ્રંથના આધારે ભગવાન મહાવીરસ્વામીના પ્રથમ ઉપદેશ સંબંધી દિગમ્બર માન્યતાને અતિપ્રાચીન બતાવવાનો અને શ્વેતામ્બર આગમોને તે પછીના બતાવવાનો પ્રયત્ન કરે છે, તે '**तिलोयपन्नत्ति**' ગ્રંથ તો છેક નવમા સૈકામાં રચાયાની હકીકત–ધવલા અને જયધવલાના અનુવાદક પ્રસિદ્ધ દિગમ્બર વિદ્વાન્ પં. ફૂલચંદજીએ પોતાના એક નિબંધમાં પુરવાર કરી છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

એટલે શ્વેતામ્બર આગેવાનોનાં નામે કે 'तिलोयपन्नत्ति'ના નામે વીરશાસન-જયન્તી-ઉત્સવ સંબંધી 'अनेकान्त'ના સમ્પાદક શ્રી જુગલકિશોરજી મુખ્તાર તરફથી કરવામાં આવતો પ્રચાર કેટલો નિરાધાર છે તે આ ઉપરથી બરાબર સમજી શકાય છે.

શ્રીમાન્ સિંધીજીના આ પત્રની જેમ જ બીજા શ્વેતામ્બર વિદ્વાનો કે આગેવાનોના પત્ર કે ખુલાસા સમયે પ્રગટ કરવાની આશા સાથે અમે આ પત્ર વાચકો સમક્ષ રજૂ કરીએ છીએ. —તંત્રી

श्रीमान् बाबू बहादुरसिंहजी सिंघीनो पत्र

सिंघी पार्क, ४८, गरियाहाट रोड, पो. बालीगञ्ज,-कलकत्ता

श्रीयुत अधिष्ठाता वीरसेवामंदिर की सेवामें

निवेदन है कि अनेकान्त के छट्ठे वर्ष का जो विज्ञप्ति अंक अभी मेरे पास आया है उसमें वीरशासन जयन्ती का ढाई सहस्राब्दी महोत्सव मनवाने की योजना से सम्बन्ध रखने वाला एक प्रस्ताव छपा है। उसमें वीरशासन की जयन्ती के महोत्सव को अखिल भारतवर्षीय जैन महोत्सव का रूप देने की बात कही गई है और उसीमें अस्थायी नियोजक समिति के सभ्यों की नामावलि में श्वेताम्बर समाज के अन्यतम प्रतिनिधि रूप से मेरा भी नाम बिना ही पूछे दाखिल किया है। इस कारण उक्त प्रस्ताव और वीरशासन जयन्ती के महोत्सव के बारे में श्वेताम्बर समाज के एक प्रतिनिधि की हैसियत से मुझे कुछ लिखना पड रहा है। यद्यपि मैं अपना विचार श्वेताम्बर समाज के प्रतिनिधि के रूप से लिख रहा हूँ जिसमें किसी भी श्वेताम्बर व्यक्ति को आपत्ति हो नहीं सकती। फिर भी मेरा यह विचार स्थानकवासी समाज को भी मान्य होगा, क्योंकि मैं जो कुछ लिख रहा हूँ उसमें श्वेताम्बर, स्थानकवासी तथा तेरापंथी सब एकमत हैं।

जब वीरशासन जयन्ती के महोत्सव को अखिल भारतवर्षीय जैन महोत्सव बनाना हो तब यह जरूरी हो जाता है कि सभी जैन फिरकों के प्रमाणभूत और उत्तरदायी व्यक्तियों से पहले परामर्श किया जाय, जो वीरसेवामंदिर ने किया नहीं है।

प्रस्ताव में कहा गया है कि आगामी महोत्सव राजगृही के विपुलाचल पर और श्रावण कृष्ण प्रतिपद् को मनवाया जाय। जहाँ और जिस दिन भगवान् महावीर ने प्रथम उपदेश दिया था। मैं समझता हूँ प्रस्तावका यह कथन विशेष रूप से आपत्ति योग्य है। क्या श्वेताम्बर और क्या स्थानकवासी कोई आज तक यह न जानता है और न मानता है कि भगवान् महावीर ने उक्त स्थान में उक्त तिथि को प्रथम उपदेश दिया था। इसके विरुद्ध सभी श्वेताम्बर और सभी स्थानकवासी पुराने इतिहास और परम्परा के आधार पर यह मानते हैं कि भगवान महावीरने ऋजुवालिका के तट पर प्रथम उपदेश किया और सो भी वैशाख शुल्क दसमी को।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरे उक्त कथन के समर्थन में केवल परम्परागत श्रुति ही नहीं है बल्कि अधिक से अधिक पुराने ग्रन्थों का आधार भी है। जब श्वेताम्बर और स्थानकवासी समाज के सामने ऐसे ऐतिहासिक आधार हों और परम्परा भी हो तथा सब इसमें एकमत हों तब वे एक ऐसी नई निराधार बात को मान कर उसमें भाग लेकर इतिहास तथा परम्परा के मन्तव्य पर हरताल कैसे फेर सकते हैं? इसलिए मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि आपके पास पुराने से पुराने प्रमाण क्या हैं जिनमें भगवान् महावीरने विपुलाचल पर श्रावण कृष्ण प्रतिपद् को प्रथम उपदेश देने की बात कही गई हो। जहाँ तक मैं जानता हूँ दिगम्बर समाज में भी उक्त स्थान पर उक्त तिथि को प्रथम उपदेश दिये जानेकी परम्परा और जयन्ती महोत्सव की परम्परा बिलकुल नई है और निराधार भी।

फिर भी दिगम्बर समाज अपना निर्णय करने में स्वतन्त्र है, किंतु श्वेताम्बर समाज और स्थानकवासी समाज तो अपनी पुरानी सप्रमाण परम्परा को तब तक छोड नहीं सकते जब तक उन्हें मालूम न हो कि उससे भी अधिक पुराना और अधिक प्रमाणभूत आधार विद्यमान है।

यदि आपके पास अपने विचार के समर्थक पुराने प्रमाण हों तो उन्हें शीघ्रातिशीघ्र प्रसिद्ध करना चाहिएं जिससे दूसरे लोग कुछ सोच भी सकें। मेरे प्रस्तुत विचारका खुलासा आप करें या न करें तो भी मेरा यह पत्र आप अगले अनेकान्त के अङ्क में कृपया प्रकाशित कर दें। जिससे हर एक विचारवान को इस बारे में सोचने का, खोज करने का, कहने तथा निर्णय करने का यथेष्ट अवसर मिल सके।

आपको मालूम ही होगा कि जहाँ जहाँ संभव हो वहाँ सभी जगह मैं सभी फिरकों के एक जगह मिलने का पक्षपाती हूँ। इसी कारण कलकत्ता जैसे विशाल शहर में और विशाल जैन वसती वाले स्थान में सभी फिरकेवाले हम सब एक जगह मिल कर पर्व विशेष मनाते हैं; परंतु हमने यह पर्व ऐसा चुना है जिसमें किसी फिरके का मतभेद नहीं। यह पर्व है चैत्र शुक्ल त्रयोदशी—महावीरका जन्मदिवस। यदी ऐसा ही महावीर के प्रथम उपदेशका स्थान और दिन सभी फिरकों में निर्विवाद रूपसे मान्य हो तब तो उस स्थान पर उस दिन को नये जयन्ती महोत्सव की योजना का विचार संगत हो सकता है पर जहाँ मूल में ही भेद और विरोध है वहाँ सभी फिरकों का सम्मिलित रूप से भाग लेना कैसे सोचा गया यह मेरी समझ में नहीं आता? यह सूझ तो मुझे जैन फिरकों में एक नया विवादस्थान पैदा करानेवाली दिखती है।

भवदीय

बा. बहादुरसिंहजी सिंघी. कलकत्ता.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवायुप्पमाणकुलयं

संशोधक—पूज्य आचार्य महाराज श्रीविजययतीन्द्रसूरीजी

मणुआण विंसोत्तरसयं, सयं सिंह–काग–गय–हंसा ।
कच्छ–मच्छ–मयरसहस्सं, सयमाउं गिद्धपक्खीणं ॥१॥

चडलिय–सारस–सूअर–आई जीवाण पन्नासं ।
वग्घाणं चउवीसं, सट्ठी बग–कोंच–कुक्कडगं ॥२॥

सारंगाण तीसं, सुअ–सुणह–विलाड–वारसगं ।
भिग–जंबुग–चउवीसं, गो–महीसि–उंट–पणवीसं ॥३॥

गंडस्स वीसवरिसं, सोलस अज–गड्डरियाणं च ।
ससगं च चउद्दसगं, वासदुगं मुसगस्साऊ ॥ ४॥

सरड–गिह–गोह–कीडग, वरिसदुगं जुआ य कंसारी ।
मासतिगं च वीययपंखी, अहिआउं जिणेसरदिट्ठं ॥ ५ ॥

संवत् १७२९ आश्विनधवलपक्षे सरवडीग्रामे लि० जिनविनयमुनिना ।

—मनुष्य का १२० वर्ष का; सिंह, काक, हाथी, हंस आदि का १०० वर्ष का; मत्स्य, कच्छप, मकर आदि का १००० वर्ष का; गृद्धपक्षीका १०० वर्ष का; चिड़िया, सारस, सूकर आदिका ५० वर्ष का; व्याघ्र का २४ वर्ष का; बगुला, क्रौंच, कुकडा (मुर्गा) आदि का ६० वर्ष का; सारंग (मयूर) का ३० वर्ष का; तोता, कुत्ता, बिलाव आदि का १२ वर्ष का; हिरण, शृगाल आदि का २४ वर्ष का; गो, भैंस, ऊंट आदि का २५ वर्ष का; गैंडा का २० वर्ष का; बकरा, भेड़ आदि का १६ वर्ष का; शशक (सुसलिया) का १४ वर्ष का; उन्दर का २ वर्ष का, गिरगट, गृहगोधा (छिपकली), मकोडा आदि का २ वर्ष का; जवा, कंसारी और विततपंखी आदि का ३ मास का अधिक से अधिक आयुष्य जिनेश्वरोंने देखा है—ज्ञानदृष्टि से कहा है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विक्रमीय १८ वीं शताब्दी के एक हस्तलिखित-पत्र में इस विषय का ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि—

तिर्यंच	वर्षायु	तिर्यंच	वर्षायु	तिर्यंच	वर्षायु
हाथीका	१२०	बकरी	१६	पपैया	३०
सिंहका	१००	सियार	१३	तोता	१२
व्याघ्रका	६४	बिल्ली	१२	सांप	१२०
कच्छप	३८०	हंस	१००	बिच्छु	६ मास
घोडाका	४०	सारस	६०	कंसारी	४ मास
बैलका	२५	टीली	१	जूं	४ मास
भैंसका	२५	ऊन्दर	२	मच्छ	१०००
गायका	२५	सुसलिया	१४	बागुल	५०
ऊंटका	२५	मुरगा	६०	गिरगट	१
सूरका	५०	बुगला	६०	बन्दर	४०
मृगका	२४	क्रौंच	६०	मयूर	४०
गर्दभ	२४	घुग्घु	६६	मुरगी	३४
गैंडाका	४०	समली	५०	भालू (रींछ)	३२
कुत्ताका	१६	चीबरी	५	गीध	११८

इस्वी की १३ वीं सदी में श्रीहंसदेवरचित 'मृगपक्षी-शास्त्र' में कुछ प्राणियों का आयुष्य इस प्रकार बतलाया है—

गैंडा	२२	वर्ष
ऊंट	३०	,,
सिंह	२०	,,
कुत्ता	१०	,,
बकरा	९	,,
हंस	७	,,
मयूर	६	,,
खरगोश	१॥	,,
सूकर	१०	,,
चूहा	१॥	,,

उपरोक्त कुलक और तालिका में आयुष्य का जो फेर-फार विदित होता है वह क्षेत्रान्तर विशेष से समझना चाहिये। सामान्य रूपसे यह आयुष्य अधिक से अधिक बताया गया मालूम होता है। श्रीरत्नशेखरसूरिरचित 'लघुक्षेत्रसमास' ग्रन्थ में लिखा है कि—

मणुआउसमगयाई, हयाइ चउरंस अजाइ अट्ठंसा।
गोमहिसुट्ठखराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥ ९८ ॥

अर्थात्—आरकों के अनुसार मनुष्यों का जितना आयुष्य होता है उतना ही आयुष्य हाथी, सिंह, अष्टापद आदि जन्तुओं का होता है। उनके चौथे भाग का अश्व आदि का; पांचवें भाग का गो, भैंस, ऊंट, गर्दभ आदि का; आठवें भाग का बकरा, घेटा आदि का; और दशवें भाग का श्वान (कुत्ते) आदि प्राणियों का आयुष्य अधिक से अधिक समझना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ભાષા-વિશુદ્ધિ

લેખકઃ-પૂજ્ય મુનિમહારાજ શ્રી ભદ્રંકરવિજયજી [પૂ.આ.મ.શ્રી. વિજયરામચંદ્રસૂરિશિષ્ય]

સુખમય અને સફલ જીવન જીવવા માટે જેમ મનઃશુદ્ધિ, અન્નશુદ્ધિ, ધનશુદ્ધિ, વસ્ત્રશુદ્ધિ, શરીરશુદ્ધિ વગેરેની જરૂર છે, તેમ વચનશુદ્ધિની પણ જરૂર છે. જીવનવ્યવહાર માટે ઉપયોગમાં આવતા જેમ ધન અન્ન અને વસ્ત્રાદિ બાહ્ય પદાર્થ છે, તેમ વિવેક વિચાર અને વચનાદિ અંતરંગ પદાર્થો પણ છે. ધનાદિ બાહ્ય પદાર્થો વિના જેમ એક દિવસ પણ ચાલી શકતું નથી, તેમ વચનાદિ અભ્યંતર પદાર્થો વિના એક ક્ષણ પણ ચાલી શકતું નથી. કવિઓએ ગાયું છે કે-" **क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं, वाग्भूषणं भूषणम्** । " બીજાં ભૂષણો ખરેખર ખૂટી જાય છે, જ્યારે વાણીરૂપી ભૂષણ માણસને સતત્ શોભાવે છે.

એક અંગ્રેજ કવિએ કહ્યું છે કેઃ—

' The tongue is the instrument of the greatest good and the greatest evil that is done in the world.' (Releigh)

'દુનિયામાં વધારેમાં વધારે ભલું કે વધારેમાં વધારે ભૂંડું કરવાનું સાધન જીભ છે. '

દુનિયાનું ભલું કે ભૂંડું કરવાનું સૌથી અધિક સામર્થ્ય વાણીમાં છે, એનો કોનાથી ઈન્કાર થઈ શકે તેમ છે ? વિશ્વોપકારી શ્રી જિનેશ્વરદેવો સત્ય તત્ત્વોનો ઉપદેશ કરી વિશ્વ ઉપર જે ઉપકાર કરે છે, તે તેમના વચનાતિશયનો જ પ્રતાપ છે; કુતીર્થિકો અસત્ય વસ્તુઓ બતાવી મિથ્યા માન્યતાઓના અંધ કૂવામાં ઉતારી વિશ્વ ઉપર જે અપકાર કરે છે, તે પણ તેમની વચનશક્તિને જ આભારી છે. વચનસામર્થ્યનો આ પ્રતાપ સર્વ ક્ષેત્રોમાં જણાઈ આવે છે. શરીરથી તનતોડ મજૂરી કરનાર મજૂર જે કમાણી જીવનભર મજૂરી કરીને નથી કરી શકતો તે કમાણી વચનશક્તિને પ્રાપ્ત થયેલ એક કુશળ વક્તા કે વકીલ એક દિવસમાં પણ કરી લે છે. વચનશ્રવણથી માણસ ધર્મી બને છે, અને વચનશ્રવણથી જ માણસ અધર્મી બને છે. માણસના અંતરમાં રહેલી સારી કે નરસી વૃત્તિઓને એકદમ ઉત્તેજિત કરીને બહાર લાવવાનું સામર્થ્ય જેટલું વચનવર્ગણામાં રહેલું છે તેવું પ્રાયઃ બીજા કશામાં દેખાતું નથી. આજની કેળવણીમાં અક્ષરજ્ઞાનનો જે પ્રાધાન્ય આપવામાં આવે છે, તથા શાસ્ત્રોમાં કેવળજ્ઞાનાદિ પાંચ જ્ઞાનોમાં શ્રુતજ્ઞાનને જે મુખ્ય પદ આપવામાં આવ્યું છે, તેની પાછળ પણ એક યા બીજી રીતે વચનસામર્થ્યનો જ સ્વીકાર રહેલો છે. સચેતન મનુષ્યના મુખમાંથી નિકળેલું સીધું વચન તો અસર નિપજાવનારું થાય છે જ, પરન્તુ અચેતન ચિત્રપટો, ફોનોગ્રાફો કે રેડીઓગ્રામોમાંથી સંભળાતા શબ્દોની પણ ચમત્કારિક અસર થતી આજના માનવીઓના જીવન ઉપર પ્રત્યક્ષ અનુભવાય છે.

વચનશક્તિનો પ્રભાવ એક અપેક્ષાએ જ્ઞાનશક્તિથી પણ વધી જાય છે. વચનના અવલંબન વિના જ્ઞાન પણ કાંઈ કરી શકતું નથી. જ્ઞાન ગ્રહણ કરવા માટે પણ વચનની જરૂર પડે છે, અને બીજાને ગ્રહણ કરાવવા માટે પણ વચનની જરૂર પડે છે. એક આત્મામાં રહેલું જ્ઞાન બીજા આત્મા સુધી પહોંચાડવા માટે જ્ઞાનના વાહન તરીકેનું કાર્ય કરનાર વચન સિવાય બીજી કઈ ચીજ છે ? જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરાવનાર, સંસ્કારિત બનાવનાર, તથા સર્વત્ર ફેલાવનાર વચનશક્તિ જ છે, એ વાત સર્વ વાદિઓને સમ્મત છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

પરન્તુ એ વચનશક્તિથી આ દુનિયામાં જેટલું ભલું થાય છે તેનાથી ભૂંડું ઘણું થાય છે, એ કદીપણ ભૂલવું જોઇએ નહિ. વચનથી ભલા કરતાં ભૂંડું અધિક થાય છે, એ જ કારણે કેટલાક અનુભવીઓને કહેવું પડ્યું છે—

Give your ears to all tongue to none. (Shakespeare)

તારા કાન બધાને આપ, પણ જીભ કોઈને પણ ન આપ.

Hear much but speak little.

ઘણું સાંભળ પણ થોડું બોલ. વગેરે

કુદરતે પણ જીભ ઉપર અધિક સંયમ રાખવાની યોજના કરેલી છે. કાન અને આંખ બે બે છે, અને જીભ એક જ છે, છતાં બે કાન અને બે આંખોને કામ એક જ સોંપાયેલું છે, જ્યારે એક જીભને કામ બે સોંપાએલાં છેઃ એક બોલવાનું અને બીજું ખાવાનું – આ બે કામ કરનાર એક જીભ, અને એક જ કામ કરનાર બે કાન અને બે આંખની રચના જ જીભ ઉપર અધિક સંયમ રાખવા માટે માણસને શિખવે છે. છતાં દુનિયામાં જોઈએ તો માણસ બે કાન વડે જેટલું સાંભળે છે, અને બે આંખ વડે જેટલું જૂએ છે, તેનાથી પણ અધિક બોલવાને ટેવાયેલો છે. જીહ્વેન્દ્રિય ઉપરનો એ અસંયમ મનુષ્ય જાતને વધારેમાં વધારે અપકાર કરનાર નિવડે છે. જ્યાં ત્યાં નિરર્થક કજિયાઓ અને હૃદયનો સંતાપ, અપ્રીતિની વૃદ્ધિ અને પ્રીતિનો વિનાશ, વૈર વૃદ્ધિ અને વિરોધના દાવાનળ વગેરે દેખાય છે એ મોટા ભાગે વાણીના દુરુપયોગનાં જ કટુ ફળો હોય છે. જો મનુષ્ય બોલવાનું ઓછું કરી નાંખે, જેટલું સાંભળે અને જૂએ છે, તે બધું જ હૃદયમાં રાખતાં શીખે, જરૂર પડે ત્યારે પણ વિચારીને જ કોઇને પણ નુકશાન ન થાય તેની કાળજી પૂર્વક બોલે, તો ઘણી આપત્તિઓનો અંત આપોઆપ આવી જાય તેમ છે. અને એ માટે જ ભાષાવિશુદ્ધિના શિક્ષણની ભારે અગત્ય છે. જૈન શાસ્ત્રોમાં એ શિક્ષણ સંગીન રીતે આપવામાં આવ્યું છે. મુનિઓની વાગ્ગુપ્તિ તથા ભાષાસમિતિ એ શિક્ષણનું જ સુમધુર ફળ છે. એ શિક્ષણથી સુશિક્ષિત થયેલો મુનિ સતત ભાષણ કરે તોપણ કોઇને અપકાર કરનાર થતો નથી, અને એ શિક્ષણને નહિ પામેલો આત્મા સતત મૌન ધારણ કરે તો પણ ફાયદો કરવાને બદલે નુકસાન કરનારો થાય છે. જૈન શાસ્ત્રોમાં ચારિત્ર એ મુક્તિનું પરમ અંગ છે. અષ્ટ પ્રવચનમાતા એ ચારિત્રની જનેતા છે, વચનગુપ્તિ અને ભાષાસમિતિ એ અષ્ટ પ્રચવનમાતાની અંતર્ગત છે, અને એ બંને ભાષા વિશુદ્ધિને આધીન છે. ભાષાવિશુદ્ધિ એ રીતે પરંપરાએ મુક્તિનું પરમ અંગ બની જાય છે.

જૈન શાસ્ત્રોએ મુનિઓને સર્વથા મૌન ધારણ કરવાને ઉપદેશ્યું નથી, સર્વથા મૌન ધારણ કરવાથી વ્યવહાર માર્ગનો ઉચ્છેદ થાય છે, અને બીજા પણ મિથ્યાભિમાનાદિ અનેક દુર્ગુણો પોષાય છે, એ કારણે મુનિને જ્યારે જ્યારે બોલવાની જરૂર ઊભી થાય ત્યારે ત્યારે શાસ્ત્રે બતાવેલા નિયમાનુસાર તેને બોલવાનું હોય છે, અને એ રીતે શાસ્ત્રાનુસારી વચન-વિન્યાસમાં કુશળ બનેલો મુનિ ચિરકાલ સુધી બોલે તો પણ અન્યને ધર્મદાનાદિ કરવા વડે ગુણ કરનારો જ થાય છે.

વચનવિન્યાસમાં મુનિને કુશળ બનાવવા માટે જૈન શાસ્ત્રોમાં બોલવા લાયક ભાષાના ચાર પ્રકાર પાડી બતાવ્યા છે; તેમાં બોલવા લાયક સઘળી ભાષાઓનો સમાવેશ થઈ જાય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

છે. એ ચાર પ્રકાર અનુક્રમે સત્ય, અસત્ય, મિશ્ર અને અનુભય છે. મિશ્ર અને અનુભય એ નિશ્ચયથી અસત્ય છે, તથા વ્યવહારથી સત્યાસત્ય છે, જેમકે અશોકવન, શ્રમણસંઘ, એ મિશ્ર ભાષાના પ્રયોગ છે.

તેને અશોકપ્રધાન વન, શ્રમણપ્રધાન સંઘ, એ અપેક્ષાથી બોલે તો સત્ય છે, અને અશોકનું જ વન, શ્રમણનો જ સંઘ, એ રીતે અવધારણ યુક્ત બોલે તો અસત્ય છે. અનુભય ભાષા પણ વિપ્રતારણા કે અવિનીતતાદિ બુદ્ધિ પૂર્વક બોલે તો અસત્ય છે,અન્યથા સત્ય છે. શાસ્ત્રોમાં ઉપયોગ પૂર્વક બોલનારની ચારે ભાષા આરાધક માની છે, અને અનુપયોગ પૂર્વક બોલનારની ચારે ભાષા અનારાધક માનેલી છે. જૈન દૃષ્ટિએ ભાષાનિમિત્તક શુભાશુભ સંકલ્પ એ જ આરાધકપણા કે વિરાધકપણાનું તત્ત્વ છે. તેથી શુભ સંકલ્પ પૂર્વક અસત્ય ભાષા પણ સત્ય છે, અને અશુભ સંકલ્પપૂર્વક સત્યભાષા પણ પરમાર્થ દૃષ્ટિએ અસત્ય છે. સત્ય, અસત્ય, મિશ્ર અને અનુભય એ ચાર પ્રકારની ભાષામાં પ્રથમ સત્ય ભાષાના દશ પ્રકાર પાડી બતાવવામાં આવ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—

સત્ય ભાષાના દશ પ્રકાર

૧ જનપદસત્ય—પાણીને કોઈ દેશમાં 'જલ' અને કોઈ દેશમાં "ઉદક" કહે છે તે બધા જનપદસત્યના પ્રકાર છે. અહીં એક જ અર્થ માટે ભિન્ન ભિન્ન શબ્દપ્રયોગ કરવામાં દુષ્ટ વિવક્ષા કે ઠગવાની બુદ્ધિ રહેલી નથી. તેથી તે બધા શબ્દપ્રયોગો સત્ય છે.

૨ સમ્મતસત્ય—પંકજ શબ્દ અરવિંદમાં જ રૂઢ છે, પણ કાદવમાંથી ઉત્પન્ન થતા કીટાદિમાં કે કુમુદકુવલયાદિમાં રૂઢ નથી તે સમ્મતસત્ય છે.

૩ સ્થાપનાસત્ય—જિનપ્રતિમામાં જિન શબ્દ: "જિન" શબ્દ જેમ ભાવ-જિનમાં પ્રવર્તે છે તેમ સ્થાપનાજિનમાં પણ પ્રવર્તે છે. જિનપ્રતિમામાં 'જિન' શબ્દનો પ્રયોગ એ મિથ્યાત્વ છે એમ કેટલાકો કહે છે, તેઓ સ્થાપનાસત્યનું પ્રતિપાદન કરનાર સૂત્રનું ઉન્મૂલન કરવા દ્વારા અનંતા અરિહન્તોની આશાતના કરનારા તથા અનંત સંસારીપણાને ઉપાર્જન કરનારા થાય છે. શબ્દશક્તિ એકલી વ્યક્તિ કે જાતિમાં જ નહિ પણ વ્યક્તિ જાતિ અને આકૃતિ ત્રણેમાં પ્રવર્તે છે, એમ નૈયાયિકોએ પણ સ્વીકાર્યું છે. અંકવિન્યાસ, અક્ષરવિન્યાસ, મુદ્રાવિન્યાસ ઇત્યાદિ સ્થાપના સત્ય છે.

૪ નામસત્ય—ધનરહિતને "ધનવર્ધન" અને કુલવિહીનને 'કુલવર્ધન' ઇત્યાદિ ભાવાર્થવિહીન નામ આપવાં તે નામસત્ય છે.

૫ રૂપસત્ય—લિંગધારી સાધુમાં 'સાધુ' અને વેષધારી યતિમાં 'યતિ' શબ્દનો પ્રયોગ એ રૂપસત્ય છે. નાટકીયા રાજા મંત્રી ઇત્યાદિ પણ રૂપસત્ય છે. ('સ્થાપના'ની પ્રવૃત્તિ તજ્જાતીય અને સદોષમાં હોતી નથી અને 'રૂપ'ની હોય છે, આટલો સ્થાપના-સત્ય અને રૂપસત્યમાં ફેર છે).

૬ પ્રતીત્યસત્ય—અણુ મહત્ હ્રસ્વ દીર્ઘ ઇત્યાદિ પરસાપેક્ષ પદાર્થોનું પ્રતિપાદન એ પ્રતીત્યસત્ય છે, અણુત્વ મહત્વાદિ પરાપેક્ષ ધર્મો સર્વથા અસત્ છે; એમ ન કહેવું. કર્પૂર ગન્ધસ્વભાવથી જ અને શરાવ ગન્ધજલસંપર્કથી જ છે તેથી અસત્ કે તુચ્છ ગણાય નહિ.

૭ વ્યવહારસત્ય—'**पीयते नदी**' '**दह्यते गिरिः**' '**गलति भाजनम्**' '**अनुदरा**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

કન્યા' 'અલોમા પડકા' નદીનું નીર પીવાય છે, ગિરિનાં તૃણ બળે છે, ભાજન ગત જલ ગળે છે, કન્યાને સંભોગજ-બીજ-પ્રભવ ઉદરનો અભાવ છે, બકરાંને લવન કરવા યોગ્ય-કાપવા યોગ્ય લોમનો અભાવ છે, ઇત્યાદિ પ્રયોગ એ વ્યવહારસત્ય છે.

૮ **ભાવસત્ય**—સદભિપ્રાય પૂર્વક બોલાયેલી, પારમાર્થિક ભાવને જણાવનારી અથવા શાસ્ત્રીય વ્યવહારને નિયંત્રિત કરનારી ભાષા એ ભાવસત્ય છે, જેમ કે કુંભને જ કુંભ કહેવો, બલાકાને શ્વેત જ કહેવી, ઇત્યાદિ ભાવસત્ય એટલે પરમાર્થસત્ય છે.

૯ **યોગસત્ય**—છત્રના યોગથી છત્રી, દંડના યોગથી દંડી, કુંડલના યોગથી કુંડલી, ઇત્યાદિ યોગસત્ય છે.

૧૦ **ઉપમાસત્ય**—ઉપમા, ઉપમાન, ઉદાહરણ, જ્ઞાત, દૃષ્ટાંત, નિદર્શન ઇત્યાદિ ઉપમાસત્ય છે. ઉપમા બે પ્રકારની છેઃ એક ચરિત અને બીજી કલ્પિત. બ્રહ્મદત્ત ચક્રવર્તીનું નરકગમન ઇત્યાદિ ચરિત છે, સંસારસાગર, ભવઅટવી, મુક્તિકન્યા, ઇત્યાદિ કલ્પિત છે. અનિત્યતા માટે પિપ્પલપત્ર અને જડતા માટે મુદ્ગશૈલ-પાષાણાદિનાં દૃષ્ટાંતો પણ કલ્પિત છે. કલ્પિત દૃષ્ટાંતો પણ ઈષ્ટાર્થનાં સાધક છે, તેથી આદરણીય છે. સાધારણ ધર્મથી ઉપમા ન હોય કિન્તુ અસાધારણ ધર્મોથી જ હોય, જેમ કે ચન્દ્રમુખી-એમાં ચંદ્રના આહ્લાદકત્વાદિ અસાધારણ ધર્મથી ઉપમા છે, કિન્તુ જ્ઞેયત્વ અભિધેયત્વાદિ સાધારણ ધર્મોથી નહિ.

અસત્ય ભાષાના દશ પ્રકાર

૧ **ક્રોધનિઃસૃત**—ક્રોધાવિષ્ટની અસત્ય ભાષા-જેમકે ક્રોધાવેશમાં પોતાના પુત્રને જ કહેવું કે 'તું મારો પુત્ર નથી' મિત્રને કહેવું કે 'તું મારો મિત્ર નથી' ઇત્યાદિ. અથવા ક્રોધાવિષ્ટનું સત્ય વચન પણ અસત્ય છે, વ્યવહારથી સત્ય હોવા છતાં ફલોપયોગી સત્યત્વ તેમાં નથી, કારણ કે સંક્લિષ્ટાચરણને શાસ્ત્રે નિષ્ફળ જ માનેલું છે, અથવા સ્થિતિબન્ધ કે રસબન્ધમાં કારણ યોગ નથી, કિન્તુ કષાય છે. ક્રોધાવિષ્ટને ક્રોધથી ક્લિષ્ટ કર્મબન્ધ થાય છે, પણ સત્યથી તેને સ્વતંત્રપણે શુભ બન્ધ થતો નથી, કિન્તુ અશુભ ફલજનક થાય છે.

૨ **માનનિઃસૃત**— અલ્પધનવાળો કહે કે હું 'બહુ ધનવાળો' છું અને અલ્પ જ્ઞાનવાળો કહે કે હું 'મહાજ્ઞાની' છું-ઇત્યાદિ અથવા માનાવિષ્ટ જે બોલે છે તે બધું અસત્ય જ છે, કારણ કે નિષ્ફલ અને મહાબન્ધનું કારણ છે. સત્યનું કાર્ય (શુભ બન્ધરૂપ) થતું નથી અને અસત્યનું કાર્ય (કર્મબન્ધ રૂપ) થાય છે તેથી પરમાર્થથી તે અસત્ય જ છે.

૩ **માયાનિઃસૃત**—ઐન્દ્રજાલિક કહે કે 'હું દેવેન્દ્ર છું' અથવા માયાવિષ્ટની સઘળી ભાષા અસત્ય છે કારણ કે તેથી સત્યનું કાર્ય શુભ બન્ધ થતો નથી, અને અસત્યનું કાર્ય કર્મબન્ધ થાય છે.

૪ **લોભનિઃસૃત**—ખોટા તોલાંને સાચાં તોલાં કહેવાં, ખોટાં માપાં ને સાચાં માપાં કહેવાં, અથવા લોભાવિષ્ટની સઘળી વાણી અસત્ય જ છે, સત્યનું કાર્ય શુભ બન્ધ છે નહિ અને અસત્યનું કાર્ય અશુભ બન્ધ રહેલો છે.

૫ **પ્રેમનિઃસૃત**—પ્રિયતમનું પ્રિયતમાની આગળ કહેવું કે હું તારો દાસ છું. પ્રેમ મોહોદયજનિત પરિણામ વિશેષ હોવાથી અશુભ કર્મબન્ધનો હેતુ છે, તેથી અસત્ય છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૬ **દ્વેષનિઃસૃત**--દ્વેષાવિષ્ટનું સઘળું વચન અસત્ય છે જેમકે 'જિનેશ્વર કૃતકૃત્ય નથી' 'જિનેશ્વરનું ઐશ્વર્ય ઐન્દ્રજાલિક છે,' ઇન્દ્ર જાલિયા વગેરે વિદ્યાતિશય વડે પણ ઐશ્વર્ય બતાવે છે, તેમ જિનેશ્વર ઇન્દ્રજાલિક છે પણ કર્મક્ષય કરવા વડે કૃતાર્થ થયેલ નથી, એ પ્રમાણે ભગવદ્ગુણમત્સરિનું વચન અસત્ય છે. (પરગુણ અસહન રૂપ માત્સર્ય તે દ્વેષ છે અને તે સિવાયનો અપ્રીતિ રૂપ પરિણામ તે ક્રોધ છે. એટલો ક્રોધ અને દ્વેષમાં ફરક છે.)

૭ **હાસ્યનિઃસૃત**--હાસ્યમોહોદયજનિત પરિણામ વિશેષથી બાધિત અર્થવાળું જે મૃષા બોલે તે હાસ્યનિઃસૃત અસત્ય છે, જેમકે-' જોયેલી વસ્તુ પણ મેં જોયેલી નથી ' ઇત્યાદિ કહેવું તે.

૮ **ભયનિઃસૃત**--ભયથી વિપરીત કહેવું-ચોરી કરી હોય છતાં રાજ્યની આગળ ' હું ચોર નથી એમ કહેવું તે. '

૯ **આખ્યાયિકાનિઃસૃત**--રામાયણ મહાભારતાદિ ગ્રન્થોમાં જે અસમ્બદ્ધ વચનો કહ્યાં છે તે આખ્યાયિકાનિઃસૃત અસત્ય છે. વેદાદિ શાસ્ત્રોમાં જે વચનો કહ્યાં છે તે કાલાસુરાદિએ લોકોને ઠગવા માટે કહ્યાં છે માટે તે આખ્યાયિકાનિઃસૃતમાં નહિ પણ માયાનિઃસૃતમાં અંતર્ભાવ પામે છે.

૧૦ **ઉપઘાતનિઃસૃત**--પર અશુભ ચિન્તન પરિણત અભ્યાખ્યાનાદિ ' અચોરને ચોર કહેવો ' ઇત્યાદિ ઉપઘાતનિઃસૃત અસત્ય છે.

અસત્ય પણ પ્રશસ્ત પરિણામથી બોલાય તો સત્ય છે, જેમકે પ્રવચનપ્રદ્વિષ્ટ રાજાદિકને લબ્ધિધર સાધુ ક્રોધથી કહે કે ' તું રાજા નથી ' અથવા કામાતુર સ્ત્રીની પ્રપંચ જાળમાંથી બચવા માટે શીલધુરંધર પુરુષ માયાથી કહે કે ' હું પુરુષ નથી ' તે અસત્ય નથી. અહીં નૃપપદની પ્રશસ્ત નૃપમાં કે પુરુષપદની અપ્રશસ્ત પુરુષમાં લક્ષણા થઈ શકે નહિ, અન્યથા બધે જ લક્ષણા કરવાથી કોઇ પણ વચન અસત્ય રહે જ નહિ.

અસત્ય બોલવાનાં મુખ્ય કારણ ત્રણ છે--

૧ **રાગ**--માયાદિ કષાય અને હાસ્યાદિ નોકષાય.

૨ **દ્વેષ**--ક્રોધાદિ કષાય અને ભયાદિ નોકષાય.

૩ **મોહ**--ત્રણ પ્રકારનો છે--

૧ ભ્રમ--અતદ્રૂપમાં તદ્રૂપનો અધ્યવસાય.

૨ પ્રમાદ--ચિત્તાનવધાનતા (અનુપયોગ).

૩ કરણાપાટવ--ઇન્દ્રિય-અસામર્થ્ય.

અસત્ય બોલવાનાં દશ કારણોનો ' સંગ્રહ નયન 'ના અભિપ્રાયથી ત્રણમાં સમાવેશ થઈ શકે છે. તો પણ વ્યવહારસિદ્ધિ માટે દશ વિભાગનો પ્રયોગ પણ તે તે જીવોને માટે ઉપકારક છે. અસત્યના ચાર પ્રકાર બીજી રીતે પણ થાય છે.

(૧) **સદ્ભાવપ્રતિષેધ**--જીવ નથી, પુણ્ય નથી, પાપ નથી, ઇત્યાદિ.

(૨) **અભૂતોદ્ભાવન**--જીવ છે પણ અણુ છે અથવા વ્યાપક છે, અથવા શ્યામાક તંદુલ માત્ર છે, ઇત્યાદિ.

અર્થાન્તર--ગાયને ઘોડો, ઘોડાને ગાય, ઇત્યાદિ.

ગર્હા--નિન્દવાના અભિપ્રાયથી નીચત્વવ્યંજક કાણો, અન્ધો, બહેરો ઇત્યાદિ શબ્દો બોલવા તે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સત્ય અસત્ય ઉભયના મિશ્રણ રૂપ મિશ્ર ભાષાના પણ દશ પ્રકાર છે. જે ભાષાનો વિષય અંશે બાધિત છે, અને અંશે અબાધિત છે, તે મિશ્ર કહેવાય છે. છીપને વિષે ' **इदं रजतम्।' भूतलम् घटवत्।** ' ઇત્યાદિ અસત્ય અંશે સત્ય છે. ' રજત ' અંશમાં અસત્ય છતાં ' ઇદં ' અંશમાં સત્ય છે. ' ઘટ ' અંશમાં અસત્ય છતાં ' ભૂતલ ' અંશમાં સત્ય છે.

મિશ્ર ભાષાના દશ પ્રકાર

૧ **ઉત્પન્નમિશ્ર**--'આજે દશ બાળક જન્મ્યા છે'. વસ્તુતઃ દશ નહિ પણ દશથી અધિક અથવા ઓછા જન્મ્યા છે. અથવા હું દશ રૂપિયા આપીશ એમ કહીને દશ નહિ આપતાં પંદર કે પાંચ આપવા એમાં આપવાની ક્રિયા થઇ તે સત્ય છે, પણ દશ નહિ આપતાં ઓછા અધિક અપાયા તે અસત્ય છે. એ રીતે કોઈ પણ ક્રિયામાં ન્યૂનાધિક કરવા છતાં કથન મુજબ ક્રિયા કરવી તે ઉત્પન્નમિશ્ર ભાષા છે.

૨ **વિગતમિશ્ર**--ઓછા અધિક મરવા છતાં આજે દશ વૃદ્ધો મરી ગયા એમ કહેવું તે વિગતમિશ્ર છે.

૩ **ઉત્પન્નવિગતમિશ્ર**--ન્યૂનાધિક જન્મવા અને મરવા છતાં દશ જન્મ્યા અને દશ મર્યા એમ કહેવું તે ઉત્પન્ન વિગત મિશ્ર છે.

૪ **જીવમિશ્ર**--બહુ જીવ અને થોડા જીવથી મિશ્ર સમુદાયને જીવ તરીકે કહેવો.

૫ **અજીવમિશ્ર**--બહુ મરેલા અને થોડા જીવતાને અજીવ સમુદાય કહેવો.

૬ **જીવાજીવમિશ્ર**--ન્યૂનાધિક જીવાજીવ હોવા છતાં જીવાજીવ રાશિ છે એમ કહેવું તે.

૭ **અનંતમિશ્ર**--પ્રત્યેક અને સાધારણ બંને હોવા છતાં અનંતકાય કહેવું.

૮ **પ્રત્યેક**--અનંતકાયથી યુક્તને પ્રત્યેકવનસ્પતિકાય તરીકે ઓળખાવવા.

૯ **અદ્ધામિશ્ર**--રાત ન પડી હોય તોપણ રાત પડી એમ કહેવું, સૂર્યોદય ન થયો હોય તો પણ સૂર્યોદય થયો એમ કહેવું ઇત્યાદિ.

૧૦ **અદ્ધાઅદ્ધામિશ્ર**--રાત કે દિવસના પ્રહરાદિ અન્ય પ્રહરાદિ સાથે મિશ્રિત કરીને બોલવા, જેમકે પ્રથમ પોરિસી વખતે મધ્યં દિન કહેવો, છેલ્લા પ્રહર વખતે સંધ્યા-સમય કહેવો ઇત્યાદિ.

અનુભય--અસત્યામૃષા અથવા વ્યવહારભાષાના બાર પ્રકાર છે--

સત્ય, અસત્ય, અને મિશ્ર, એ ત્રણ ભાષાથી વિપરીત લક્ષણવાળી ભાષાને શાસ્ત્રમાં ' અસત્યામૃષા ' અપરનામ ' વ્યવહારભાષા ' કહે છે. સત્યાદિ ભાષાની જેમ તે પ્રવર્તક નિવર્તક નથી, કિન્તુ વ્યવહાર ચલાવવાના સાધન માત્રરૂપ છે.

' **सद्भ्यो हितं सत्यम्** ' એ સત્ય શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે, સત્ એટલે સજ્જન પુરુષો, સુંદર (મૂલોત્તર) ગુણો અથવા જીવાજીવાદિ વિદ્યમાન પદાર્થો તેને હિતકારી તે સત્ય કહેવાય છે. સજ્જન પુરુષો એટલે ઉત્તમ મુનિઓને હિતકારી, જેમકે આત્મા છે, કર્મ છે, પરલોક છે, ઇત્યાદિ-મુનિમાર્ગને અનુકુલ વચનો તે સત્ય છે.

સુંદર મૂલોત્તર ગુણો તેને હિતકર એટલે તેની આરાધનામાં ઉપકારી, જેમકે અહિંસા સંયમ બ્રહ્મચર્ય ઇત્યાદિ ફલદાયી છે. હિંસા, અસંયમ, અબ્રહ્મ ઇત્યાદિ દુર્ગતિદાયક છે. જીવાજીવાદિ સત્ પદાર્થો તેને હિતકારી-યથાસ્થિત પ્રત્યાયન કરાવવા દ્વારા ઉપકારી-જેમકે આત્મા દેહવ્યાપી છે, લોક ચૌદ રજ્જુપ્રમાણ છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

એથી વિપરીત તે અસત્ય-આત્મા નથી, કર્મ નથી, પરલોક નથી; અહિંસા સંયમ તપ બ્રહ્મચર્ય આદિ ફલદાયી નથી; આત્મા સર્વ વ્યાપી છે; લોક સાત દ્વીપ સમુદ્ર પ્રમાણ છે; ઇત્યાદિ મોક્ષમાર્ગને પ્રતિકુળ, આરાધનાને અટકાવનાર, તથા પદાર્થોનો વિપરીત બોધ કરાવનારાં વચનો અસત્ય છે.

અશોકવન, આમ્રવન, ખરાબ ગામ ઇત્યાદિ મિશ્રભાષા છે. અશોક વનમાં અશોકના વૃક્ષો છે તે અંશમાં સત્ય, અને અશોક સિવાયનાં પણ વૃક્ષો છે તે અંશમાં સત્ય નથી. તે જ રીતે આમ્રવન, ખરાબ ગામ ઇત્યાદિ વાક્યોમાં પણ સત્યાસત્યનું મિશ્રણ હોવાથી મિશ્ર છે. ગામ ખરાબ છે એમ કહેવાથી ગામના પ્રત્યેક માણસ ખરાબ છે એમ નહિ, પણ ઘણાખરાં ખરાબ છે, એટલો જ એનો અર્થ છે.

વ્યવહાર ચલાવવા માટે કે સ્વરૂપમાત્રનું પ્રતિપાદન કરવા માટે હે! અરે! ઇત્યાદિ સંબોધન; આવ! જા! ઇત્યાદિ આજ્ઞા; આમ કરવું જોઇએ, આમ ન કરવું જોઈએ ઇત્યાદિ વિધિદર્શાવનાર વાક્યો વ્યવહારભાષા છે. એમાં કોઈ પણ વસ્તુનું પ્રતિષ્ઠાપન, ઉન્મૂલન કે તે બંનેને કરવાનો ભાવ નથી, કિન્તુ તે સિવાય વ્યવહાર માત્ર ચલાવવાનો એક વિલક્ષણ ભાવ છે.

અનુભય-અસત્યામૃષા ભાષાના બાર પ્રકાર

૧ **આમંત્રણી**—શ્રોતૃઅવધાનજનક હે! અયે! ભો! ઇત્યાદિ.

૨ **આજ્ઞાપની**—કરવા નહિ કરવા સંબંધી આજ્ઞાવચન.

૩ **યાચની**—ઇચ્છિત પદાર્થની પ્રાર્થના પરક વચન.

૪ **પૃચ્છની**—કયાંથી આવ્યો? કયાં જઈશ? જીવ કેટલા? અજીવ કેટલા? ઇત્યાદિ પ્રશ્નાત્મક વચન.

૫ **પ્રજ્ઞાપની**—વિનીતને કર્તવ્યનું પ્રતિપાદન કરનાર વિધિવચન.

૬ **પ્રત્યાખ્યાની**—' પાપ નહિ કરું ' ઇત્યાદિ નિષેધ પ્રતિજ્ઞાવચન.

૭ **ઇચ્છાનુલોમા**—' આકરું છું ' ' આ કરો ' ' વિલંબ ન કરો ' 'પ્રતિબન્ધન કરો' ' જહાસુહં દેવાણુપ્પિયા ' ઇત્યાદિ ઇચ્છાનુકુળ વર્તવા માટે કહેવામાં આવતાં વચનો.

૮ **અનભિગ્રહિતા**—કોઈ એકનું પણ અવધારણ નહિ કરનાર યદૃચ્છમાત્ર મૂલક ' ડિત્થ ' ' ડવિત્થાદિ ' પદો.

૯ **અભિગૃહિતા**—કોઈ એકનું પણ અવધારણ કરાવનાર ઘટાદિ પદો.

૧૦ **સંશયકરણી—સૈન્ધવમાનય**। સૈન્ધવને લાવ. સૈન્ધવ એટલે લવણ પણ થાય અને ઘોડો પણ થાય-એમાંથી એકનો નિશ્ચય નહિ કરાવનાર અનેક અર્થ અભિધાયક પદો.

૧૧ **વ્યાકૃતા**—પ્રકટાર્થવાળી ભાષા છે—જેમકે આ દેવદત્તનો ભાઈ છે અને યજ્ઞદત્તનો જમાઈ છે.

૧૨ **અવ્યાકૃતા**—અતિ ગંભીર અને મહાન અર્થવાલી જેનો તાત્પર્યાર્થ સહેલાઈથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ને સમજી શકાય તેવી ભાષા, અથવા સ્પષ્ટ જ્ઞાન કરાવનારી મોટા માણસોની ભાષા તે ' વ્યાકૃતા ' કહેવાય છે. અને અસ્પષ્ટ જ્ઞાન કરાવનારી બાલકાદિની ભાષાને ' અવ્યાકૃતા ' કહેવાય છે.

ઉપર્યુક્ત ચારે પ્રકારની ભાષા દેવ, નારકી અને મનુષ્યને તથા શિક્ષા અને લબ્ધિ સહિત શુકસારિકાદિ તિર્યંચોને સંભવે છે. શિક્ષા એટલે સંસ્કાર-વિશેષ-જનક પાઠ અને લબ્ધિ એટલે જાતિસ્મરણ અથવા વ્યવહાર-કૌશલ્ય-જનક ક્ષયોપશમ વિશેષ. વિકલેન્દ્રિયોને માત્ર બોથી વ્યવહારભાષા હોય છે. તેમનો સમ્યક્‌પરિજ્ઞાનભૂષિત કે પરવંચનાદિદૂષિત અભિપ્રાય હોતો નથી તેથી સત્ય, અસત્ય, કે તે બેના સંમિશ્રગુરૂપ મિશ્ર ભાષા હોતી નથી. વળી વિકલેન્દ્રિય તથા શિક્ષા અને લબ્ધિ રહિત પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોને અવ્યક્ત ભાષા હોય છે, તથા વિલક્ષણ ભાષા વર્ગણાના દલિકથી જન્ય હોય છે, તેથી પણ તેમને ક્રોધ-નિઃસૃતાદિ ભાષાઓ ઘટતી નથી.

ભાષાવર્ગણાના દલિકો

જૈનદર્શન ભાષાને ઇતર દર્શનોની જેમ આકાશના ગુણાદિ સ્વરૂપ નહિ પણ પૌદ્‌ગલિક દ્રવ્ય સ્વરૂપ માને છે. આઠ પ્રકારની જીવને ગ્રહણ યોગ્ય પૌદ્‌ગલિક વર્ગણાઓ છે, તેમાં ' ભાષા ' એ પણ એક વર્ગણા છે. તે જીવને ગ્રહણ યોગ્ય અને સૂક્ષ્મ છે. પાંચ વર્ણ, બે ગંધ, પાંચ રસ, અને ચાર સ્પર્શવાલા અનંત પ્રદેશી સ્કંધોથી બનેલી ભાષાવર્ગણાઓ— લોકમાં ઠાંસીને ભરેલી હોય છે. તે ભાષાવર્ગણાના અનંતપ્રદેશી સ્કંધો આત્મશક્તિદ્વારા પ્રેરિત થઈને વચનરૂપમાં પરિણત થાય છે. ભાષાવર્ગણાના દ્રવ્યોને આત્મા કાયયોગવડે ગ્રહણ કરે છે, વાગ્‌યોગરૂપે પરિણત કરે છે, અને ઉરઃ કંઠાદિ સ્થાનોના પ્રયત્નપૂર્વક વિસર્જન કરે છે. ભાષાના આ ગ્રહણ, પરિણમન અને વિસર્જનનું યથાતથ્ય સુવિસ્તૃત સ્વરૂપ જૈનાગમ ગ્રન્થોમાં પ્રતિપાદન કરેલું છે. પ્રથમ સમયે ભાષાદ્રવ્યનું ગ્રહણ થાય છે અને દ્વિતીય સમયે પરિણમન તથા નિસર્જન થાય છે. નિસર્જન થયેલાં તે ભાષાદ્રવ્યોવડે અન્ય ભાષા-દ્રવ્યો વાસિત થાય છે, તેને પરાઘાત કહેવામાં આવે છે. નિસર્ગાનુકૂળ કાયસંરંભને વચોયોગ કહેવાય છે.

ગ્રહણ કરાતાં ભાષા દ્રવ્યો સ્થિર, દ્રવ્યથી અનંત પ્રદેશી, ક્ષેત્રથી અસંખ્યેય પ્રદેશા-વગાઢ, કાલથી એક સમય સ્થિતિકથી માંડી અસંખ્યેય સમય સ્થિતિક અને ભાવથી પાંચ વર્ણ, બે ગંધ, પાંચ રસ, બે ત્રણ યા ચાર સ્પર્શવાલા હોય છે. એકગુણ શીતથી યાવત્ અનંતગુણ શીત સ્પર્શ હોય છે. એ રીતે એકગુણ શ્યામથી યાવત્ અનંતગુણ શ્યામ હોય છે. એમ ભાવથી સર્વ ગુણોમાં સમજી લેવું.

નિસર્જન બે રીતે થાય છેઃ તીવ્ર પ્રયત્નથી, અને મંદ પ્રયત્નથી—તીવ્ર પ્રયત્નથી ભાષાવર્ગણાનાં દ્રવ્યો ભેદાય છે, અને એ ભિન્ન દ્રવ્યો છએ દિશાએ લોકાન્ત સુધી જાય છે. સૂક્ષ્મ અને બહુ હોવાથી, તથા અન્ય દ્રવ્યોને વાસક હોવાથી અનંતગુણ વૃદ્ધિયુક્ત બને છે. મન્દ પ્રયત્નથી ભેદાતા નથી અને એ અભિન્ન દ્રવ્યો સંખ્યાતા યોજન જઈને વિલય પામે છે,—શબ્દ પરિણામને છોડી દે છે. ભાષાદ્રવ્યોનો ભેદ પાંચ પ્રકારે થાય છેઃ ખંડભેદ, પ્રતરભેદ, ચૂર્ણિકાભેદ, અનુતટિકાભેદ, અને ઉત્કારિકાભેદ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧ ખંડભેદ—સોનું, રૂપું, સીસું ઇત્યાદિની જેમ.
૨ પ્રતરભેદ —વાંસ, વેત્ર, નલ, અભ્રક, કદલી ઇત્યાદિની જેમ.
૩ ચૂર્ણિકાભેદ—તલ, મગ, અડદ, મરી, ઇત્યાદિની જેમ.
૪ અનુતટિકાભેદ—દ્રહ, નદી, વાવડી, પુષ્કરી, દીર્ઘિકા, સરોવર ઇત્યાદિની જેમ.
૫ ઉત્કારિકાભેદ—તલસીંગ, મગસીંગ, એરંડબીજ ઇત્યાદિની જેમ.

સર્વ સ્તોક ઉત્કારિકા ભેદ હોય છે, તેથી પશ્ચાનુપુર્વી ક્રમે અનંતગુણ અધિક હોય છે, તાલુ આદિના પ્રયત્નપૂર્વક ઉચ્ચરિત ભાષાદ્રવ્યો ભાષાપ્રાયોગ્ય અન્ય દ્રવ્યોને વાસિત-પરાઘાતક કરે છે. વિશ્રેણિમાં રહેતા શ્રોતા વાસિતને જ સાંભળે છે, સમશ્રેણીમાં રહેલ મિશ્રને સાંભળે, છે; વાસિત અને મિશ્ર સિવાયનાં કેવળ શુદ્ધ ભાષાદ્રવ્યો શ્રવણ કરાતાં નથી. કહ્યું છે કે,

पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंध रसं च फासं बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ १ ॥

શબ્દ સ્પર્શ કરાયેલો સંભળાય છે, રૂપ સ્પર્શ કરાયા વિના દેખાય છે, તથા ગન્ધ રસ અને સ્પર્શ બદ્ધસ્પૃષ્ટ ગ્રહણ થાય છે. શબ્દના પુદ્ગલો સૂક્ષ્મ, ભાવુક અને ઘણા હોય છે, તેથી સ્પૃષ્ટમાત્રથી સંભળાય છે. ગંધ રસ અને સ્પર્શના પુદ્ગલો બાદર, અભાવુક અને અલ્પ હોય છે તેથી સ્પૃષ્ટ અને બદ્ધ થયેલા જ ગ્રહણ થાય છે. સ્પૃષ્ટ એટલે અડેલાં અને બદ્ધ એટલે ગાઢ રીતે મળેલાં. શ્રોત્રેન્દ્રિય અને ચક્ષુર્ઇન્દ્રિય પટુ છે, બીજી ઇન્દ્રિયો અપટુ છે. શ્રોત્રેન્દ્રિય ઉત્કૃષ્ટ ૧૨ યોજનથી આવેલા શબ્દોને સાંભળે છે, ભાસુરરૂપ ૨૩ લાખ યોજન દૂરથી ગ્રહણ થાય છે, ગંધ, રસ, અને સ્પર્શ યાવત્ ૯ યોજન દૂરથી આવેલાં ગ્રહણ કરાય છે.

ઉપસંહાર

ભાષાની સત્યાસત્યતા, સાવદ્યનિરવદ્યતા, સદોષનિર્દોષતા, અને વ્યવહારમિશ્રતા ઇત્યાદિને જે જાણતો નથી તેવા અગીતાર્થને જૈન શાસ્ત્રો બોલવાનો પણ નિષેધ કરે છે, તો પછી ઉપદેશાદિ કરવાની તો વાત જ ક્યાં? શ્રી દશવૈકાલિક પ્રમુખ સિદ્ધાન્તની અંદર મુનિઓના વાક્યની શુદ્ધિ માટે વિસ્તૃત વિવેચન કરેલું છે. વાતચીતના વિષયમાં આવનારા મનુષ્યથી તિર્યંચ પર્યંત અને એકેન્દ્રિયથી પંચેન્દ્રિય પર્યંત, પદાર્થો સંબંધી બોલવામાં સંભાળભરી કાળજી રાખવામાં ન આવે તો કેવો મોટો અનર્થ ઉત્પન્ન થાય છે અને બોલનારને તેના કેવા કટુક વિપાકો અનુભવવા પડે છે, એ સૂક્ષ્મ અભ્યાસથી સમજવા યોગ્ય છે. અહીં તો માત્ર તેનું સ્થૂલ દિગ્દર્શન કરાવવામાં આવે છે.

૧. જે પંચેન્દ્રિય પશુઓના સ્ત્રીત્વ પુરુષત્વનો નિર્ણય ન હોય તેને માટે સામાન્ય વાચક શબ્દ પ્રયોગ કરવો જોઇએ, પણ સ્ત્રી-પુરુષ વાચક નહિ. જેમકે દૂર રહેલ ગાય કે બળદનો નિર્ણય ન હોય તો તેને ગાય કે બળદ નહિ કહેતાં ઢોર શબ્દથી ઓળખવા જોઇએ, અન્યથા અસત્યનો સંભવ છે.

૨. મનુષ્ય, પશુ, પક્ષી, સર્પ આદિને 'આ મનુષ્ય સ્થૂલ છે,' 'આ ગાય વધ્ય છે,' 'આ બોકડો પાચ્ય છે,' 'આ સર્પ પ્રમેદુર છે,' ઇત્યાદિ વચનો કહેવાં નહિ. એથી મનુષ્યને અપ્રીતિ, તથા પશુ પક્ષી ઇત્યાદિને આપત્તિ અને વિનાશના દોષનો પ્રસંગ છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૩. આ ગાયો દોવા લાયક છે, આ બળદો જોડવાલાયક છે, આ આખલાઓ દમવા-લાયક છે, ઇત્યાદિ બોલવાથી અધિકરણ અને લઘુતાદિ દોષનો સંભવ છે.

૪. આ વૃક્ષ પ્રાસાદ એટલે મહેલને યોગ્ય છે, આ સ્થંભને યોગ્ય છે, આ ઘરને યોગ્ય છે, અને આ તોરણને યોગ્ય છે, ઇત્યાદિ ન કહે. જરૂર પડે ત્યારે 'આ દર્શનીય છે, આ દીર્ઘ છે, આ વૃત્ત છે, આ ઉત્તમ જાતિવાળું છે,' ઇત્યાદિ શબ્દથી બોલે.

૫. ફલ ઔષધિ આદિ પકવ છે, વેલોચિત છે, લવન અને ભર્જન યોગ્ય છે, ઇત્યાદિ ન કહે. માર્ગદર્શનાદિ પ્રયોજને આ આમ્ર ભાર ઉઠાવવાને અસમર્થ છે, આ વૃક્ષ બહુ ફળવાળું છે ઇત્યાદિ કહે. જે વાકય બોલવાથી સાક્ષાત્ અધિકરણત્વાદિ પ્રવૃત્તિનું જનક જાની જાય, તે વાકય બોલવાનો નિષેધ છે.

૬. જમણવારને જમણ ન કહે પણ સંખડી કહે, નદીને સારા કિનારાવાલી ન કહે પણ જરૂર પડે તો બહુ કિનારાવાલી કહે, નદી ભરેલી છે, તરી શકાય એવી છે ઇત્યાદિ ન કહે, પણ પ્રયોજન પડે તો પ્રાયઃ ભરેલી, પ્રાયઃ ઊંડી ઇત્યાદિ કહે.

૭. આ કન્યા સુંદર છે, આ સભા સારી છે, આ રસોઈ સારી છે, ઇત્યાદિ ન કહે, એથી અનુમતિનો દોષ લાગે. આ અભિમાનીને ઠીક ફલ મલ્યું, આ પ્રત્યનીક મરી ગયો તે ઠીક થયું ઇત્યાદિ પણ ન કહે, એથી પણ અનુમતિનો દોષ લાગે. અસંયમીને આવ ! જા ! બેસ ! ઊઠ ! કર ! જાણ ! ઇત્યાદિ ન કહે. એથી પણ અનુમતિનો દોષ લાગે.

૮. બોટિક (દિગમ્બર), નિહ્નવ (પ્રતિમાલુંપક) ઇત્યાદિ સદોષની પ્રશંસા ન કરે, દેવ, અસુર, મનુષ્ય, તિર્યંચ આદિના યુદ્ધમાંથી અમુકનો જય થાઓ અને અમુકનો પરાજય થાઓ ઇત્યાદિ ન કહે, એથી અધિકરણ અને દ્વેષાદિનો પ્રસંગ થાય. વાત, વૃષ્ટિ, શીત, ઉષ્ણ, સુભિક્ષ, દુર્ભિક્ષ, ઇત્યાદિને જાણે તો પણ ન કહે. મેઘને દેવ, મનુષ્યને રાજા, કે આકાશને બ્રહ્મ ઇત્યાદિ ન કહે, એથી અધિકરણ અસત્ય આદિ દોષોનો પ્રસંગ થાય.

૯.નિરવદ્ય સુકૃતની પ્રશંસા કરે, જેમકે બ્રહ્મચર્ય સુંદર છે, વૈરાગ્ય સારો છે, વૈયાવચ્ચ અપ્રતિપાતી છે, ઉપસર્ગસહનથી નિર્જરા છે, પંડિતમરણ સદ્ગતિનું કારણ છે, સાધુ સદ્ગતિનું કારણ છે, સાધુક્રિયા નિરવદ્ય છે, ઇત્યાદિ પ્રશંસાનાં વાકયોથી ધર્મની વૃદ્ધિ થાય છે.

એ રીતે ભાષાના ગુણ-દોષોને જાણી જેમ ગુણ વધે અને દોષ ઘટે તેમજ બોલવું જોઈએ. ભાષાની વિશુદ્ધિ ચારિત્રની વિશુદ્ધિને કરે છે, અને ચારિત્રની વિશુદ્ધિ વિપુલ નિર્જરાને કરાવે છે. ચારિત્રની વિશુદ્ધિથી (૨૮) પ્રકારનો મોહ ક્ષય પામે છે. મોહક્ષયથી કૈવલ્ય, કૈવલ્યથી શૈલેશીકરણ, શૈલેશીકરણથી સર્વસંવર અને સર્વસંવરથી અનુત્તર મુક્તિનું સુખ પ્રાપ્ત થાય છે. મુક્તિનું સુખ સકલ સાંસારિક સુખસમૂહથી અનંતગુણું છે, દુઃખ લેશથી પણ અસંપૃક્ત અને અવિનાશી છે. વિશુદ્ધ ચારિત્રના પાલન વિના એ સુખ શકય નથી, વિશુદ્ધ ચારિત્રપાલનનો ઉપાય ભાષાવિશુદ્ધિ છે. ભાષાવિશુદ્ધિનો ઉપાય હિત, મિત, સ્તોક અને અવસરોચિત ભાષાવડે ગુણકર વાકયોને બોલવાં, તે છે. ટૂંકમાં જે બોલવાથી રાગદ્વેષાદિ દોષો ઘટે, અને સમ્યગ્જ્ઞાનાદિ ગુણો વધે તે જ બોલવું મુનિને અગર વિવેકીને યોગ્ય છે, એવો સર્વજ્ઞોનો ઉપદેશ છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

જુહાર અને જોહર

લેખક–પ્રો. હીરાલાલ રસિકદાસ કાપડિયા એમ. એ.

'જુહાર' વિષે લખવું એ વિચાર તો મારા મનમાં કેટલાંયે વર્ષો ઉપર ઉદ્ભવ્યો હતો. દોઢ વર્ષ ઉપર **આર્હત જીવન જ્યોતિ**ના છઠ્ઠા ભાગ રૂપ છઠ્ઠી કિરણાવલીના પ્રકાશન–સમયે પણ આ વિચાર આવ્યો હતો, પણ એને મૂર્ત રૂપ અપાયું નહિ. થોડા વખત ઉપર ભાંડારકર પ્રાચ્ય વિદ્યા સંશોધન મંદિરના રૌપ્ય (ઇ. સ. ૧૯૧૭-૧૯૪૨) મહોત્સવ અંક (પૃ. ૩૩૦–૩૩૫)માં **એ. જી. પવાર**નો "A Note on the Meaning and Use of the word Johar" નામક લેખ વાંચતાં ફરી આ વિચાર સતેજ થયો અને આ સંબંધમાં મારા મનમાં અત્યાર સુધી થયેલી ગડમથલ પાછી જાગૃત થઈ. આથી એને લિપિબદ્ધ કરવા આજે તો હું પ્રવૃત્તિ કરું છું, જો કે હજી આ સંબંધમાં મારે કેટલીક તપાસ અને વિચારણા કરવી બાકી રહે છે. સૌથી પ્રથમ તો હું ઉપર્યુક્ત લેખગત બાબતો રજુ કરું છું:—

(૧) દાક્ષિણાત્ય–મરાઠા પરંપરા પ્રમાણે **રામદાસે શિવાજી**ને 'જોહાર'નો પ્રયોગ કરવાનું છોડીને 'રામ રામ'નો પ્રયોગ કરવા સૂચવ્યું. બખરમાં આ પરિવર્તનને અંગે વિવિધ હેવાલો અપાયા છે, તેમાંના એકમાં એમ છે કે "શિવાજી! આ તો તમારું હિન્દુ રાજ્ય છે. એથી મુસ્લિમોની જેમ 'જોહાર' કરવાનો રિવાજ હિંદુ ધર્મથી વિરુદ્ધ છે. એથી કેવળ શૂદ્રો–નીચ જાત સિવાયના હિંદુઓએ એનો પ્રયોગ કરવો નહિ."

(૨) આ કથનને ઇતિહાસનો ટેકો નથી, કેમકે 'રામ રામ' શબ્દ **રામદાસ**ના સમય કરતાં પ્રાચીન છે. વળી **શિવાજી**ના રાજ્ય દરમ્યાન જ નહિ પણ ઓછામાં ઓછી, સત્તરમી સદીના અંત સુધી 'જોહાર' કહેવાની પ્રથા હતી. **શિવાજી**એ પોતે એના મૃત્યુ પહેલાં ત્રણ વર્ષ અગાઉ 'જોહાર' શબ્દ એક પત્રમાં વાપર્યો છે અને એના પુત્ર **રાજારામે** ઈ. સ. ૧૬૯૦માં તેમ કર્યું છે.

(૩) **'જોહાર'** એ ખાસો પ્રાચીન શબ્દ છે અને 'રામ રામ' શબ્દ અઢારમી સદી પછી ખૂબ વપરાવા લાગ્યો.

(૪) **'જોહાર'**ને બદલે બીજા પણ શબ્દો વખતોવખત વપરાયા છે. જેમકે ઈ. સ. ૧૬૦૦ માં લખાયેલા એક પત્રમાં 'દંડવત્' અને પંદર વર્ષ પછીના પત્રમાં 'સાષ્ટાંગ દંડવત્' વપરાયેલ છે. આજે પણ આ શબ્દો વપરાય છે.

(૫) 'જોહાર'ના મૂળમાં મુસ્લિમ તત્ત્વ હોત તો **શિવાજી**ની આજ્ઞાથી તૈયાર કરાયેલ **રાજ્યવ્યવહારકોશ** જેમાં મુખ્યતયા ફારસી શબ્દોના સંસ્કૃત પર્યાયો અપાયેલા છે, તેમાં આ શબ્દ હોત.

આ સંબંધમાં નીચે મુજબનું પદ્ય રજુ કરાયેલું છે:

शिरसा वन्दनं शिज्दा प्रणामस्तीस्लमा भवेत्।
नमस्कारः सलामः स्यादाशीर्वादो दुवा स्मृतः॥

(૬) ફારસી ભાષા અને મુસ્લિમ સંસ્કૃતિની સાથે હિંદુ સમાજ સંપર્કમાં આવ્યો તે કરતાં 'જોહાર' શબ્દ વિશેષ પ્રાચીન છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(૭) લગભગ ઈ. સ. ૩૦૦ માં રચાયેલી ગાહાસત્તસઈ (સં. **ગાથાસપ્તશતી**) માં **' न होत्ति देवाण जोक्कारा '** એવું વાકય છે.

વેબરે '' जोक्कारा नमस्कारा जोहारा इति वा ' એમ પાઠાન્તર આપેલ છે.

ઈ. સ. ૮૭૦ની આસપાસમાં થઈ ગયેલા **શીલાંકની આવસ્સય** (સં. આવશ્યક) ઉપરની ટીકામાંની એક વાર્તામાં

" दिट्ठो जोहारिज्जइ जं जं सो भणइ तं च कायव्वं " એવો ઉલ્લેખ છે.

ઈ. સ. ની ચૌદમી સદીના કન્નડ ગ્રંથ **ભસવપુરાણુમાં** એના કર્તા **ભીમ** કવિએ ' જ્હોહાર ' તેમજ ' જ્હોહર ' શબ્દ અનેક વાર વાપરેલ છે.

(૮) ' જ્હોહાર ' એ આપણા દેશનો શબ્દ છે. એ પ્રાકૃતમાં અને કદાચ સંસ્કૃતમાંથી ઊતરી આવેલો છે.

એક હસ્તલિખિત પ્રતિમાં **જોક્કારનું** મૂળ **જયકાર** છે એમ **વેબરે** સૂચવ્યું છે.

હું આની વ્યુત્પત્તિ દર્શાવવા સમર્થ નથી એમ મને લાગે છે. મારા મિત્ર ડૉ. **ઘાટગે જોષકાર** માંથી ' જ્હોહાર ' શબ્દ બની શકે એમ કહે છે.

રજપુતોમાં જે ' જ્હૈાહાર' કરવાની પ્રથા હતી એ પ્રથાગત 'જ્હૈાવાર' શબ્દનો 'જ્હોહાર' સાથે શો સંબંધ છે તે હું જાણતો નથી. **વિન્સન્ટ સ્મિથે** " Akabar, the Great Mogul " (પૃ. ૭૨, ટિપ્પણ) માં ' જ્હૈાહાર ' પ્રાકૃત શબ્દમાંથી નિષ્પન્ન થયો છે એમ સૂચવ્યું છે.

મોલ્સવર્થ એના મરાઠી કોશમાં **જોહારના** મૂળ તરીકે **योड्डर** સૂચવે છે. વિશેષમાં ત્યાં એમણે આ શબ્દનો બીજો અર્થ એ આપ્યો છે કે ' રાજાને એના ખિજમતદારો તરફથી પ્રણામ સૂચવવા વપરાતો શબ્દ. '

(૯) ' જ્હોહાર ' એમ ઉચ્ચાર કરતી વેળા શારીરિક હાલનચાલન થતું અને **ભસવ-પુરાણ** પ્રમાણે તો બે હાથ ઊંચા કરાતા.

(૧૦) ' જ્હોહાર ' શબ્દ કોઈ અમુક જ્ઞાતિ જ અસલ વાપરતી એમ નથી, જો કે હાલમાં તો મહાર, ચમાર વગેરે એક બીજા માટે તેમ જ એમનાથી ઉચ્ચ ગણાતા જનો માટે વાપરે છે.

(૧૧) ' જ્હોહાર ' શબ્દનું પદ આ પ્રમાણે નીચું કેમ થયું તેનું કારણ જાણવામાં નથી.

હવે આ બાબતો સંબંધમાં મારું માનવું નીચે મુજબ છે:-

(૧) ' જ્હોહાર 'એ મુસ્લિમ સંસ્કૃતિ કે ફારસી ભાષા સાથેના સંપર્કનું પરિણામ નથી.

(૨) જ્હોહાર અને જ્હોહરની જેમ ગુજરાતી અને હિન્દીમાં એ અર્થમાં ' જુહાર ' શબ્દ વપરાયેલો છે. હિંદીમાં એનો અર્થ ' ઠાકોરોને કરાતી સલામ ' એવો છે એમ કોશ જોતાં જણાય છે. વિશેષમાં ભરતરામ મહેતાની અને એમના પુત્રની ભેગી કૃતિ " The Modern Gujarati English Dictionary " પ્રમાણે 'જુહાર' અર્થમાં જ્હોહર અને જુવાર શબ્દ પણ છે. કાઠિયાવાડ તરફ કેટલાક આ અર્થમાં ' જવાર ' શબ્દ પણ વાપરે છે.

(૩) **ગાહાસત્તસઈના** ૩૩૨મા પદ્યમાં **हुंति देवाण जेक्कारा** એવો પાઠ છે અને ૩૩૨ અ પદ્યમાં **जेक्कारને** સ્થાને **जोक्कार** પાઠ છે એમ **पाअसयहभहुण्णव** જોતાં જણાય છે. વિશેષમાં ત્યાં એ કોશકારે **जेक्कार** અને **जोक्कारને** એકાર્થક ગણ્યા છે. વળી **जेक्कार** માટે **'जयकार'** એવો સંસ્કૃત શબ્દ સૂચવ્યો છે અને એનો અર્થ ' જય જય ' અવાજ, સ્તુતિ એમ દર્શાવ્યો છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(૪) પાઇય સાહિત્યમાંથી **જોહાર** માટે જે ઉદાહરણ ઉપર અપાએલ છે એ ઉપરાંત [૧] **પવયણસારુદ્ધાર** (ગા. ૪૩૫) માં **જોહાર** શબ્દ છે.

આ કૃતિ વિ. સં. ૧૨૪૮ કરતાં તો પ્રાચીન છે જ, કેમકે એ વર્ષમાં એના ઉપર **સિદ્ધસેનસૂરિએ** વૃત્તિ રચી છે.

(૫) **પાઇયસદ્દમહણ્ણવ** તેમ જ અન્ય પાઇય કોશ પ્રમાણે **જોહાર** એ 'દેશ્ય' શબ્દ છે. એ નામ તેમજ ક્રિયાપદ (ધાતુ) પણ છે. ક્રિયાપદ તરીકે એનો ઉપયોગ **આવશ્યકકથા** (૨૫, ૧૩) માં કરાયેલો છે.

(૬) **જોહાર** માટેના મૂળ તરીકે જે સંસ્કૃત શબ્દ **જોષકાર** સૂચવાયો છે તે મને સમુચિત જણાતો નથી. આની ચર્ચા હું આગળ ઉપર કરું છું.

(૭) 'જૈહાર' પાઇયમાંથી નિષ્પન્ન થયો હોય તો ના નહિ. કદાચ સંસ્કૃતમાં '**યૌ**' થી શરૂ થતો અને 'પ્રણામ' વાચક કોઈ શબ્દ હોય તો તેમાંથી **જૌ, જો, જઉ** અને અંતે જુ થી શરૂ થતા શબ્દો ઉદ્ભવી શકે તેમ છે. બીજી રીતે વિચારતાં એક વાર '**જુહાર**' શબ્દ નિષ્પન્ન થતાં એમાંથી **જઉહાર** શબ્દ બને અને એ આગળ ઉપર **જોહાર** અને **જોહાર** રૂપે પરિણમી શકે.

જૂની ગુજરાતી ભાષા (પૃ. ૪૯)માં જુહાર સંબંધી નીચે પ્રમાણે ઉલ્લેખ છે.

"**જયકાર-જયઆર**-જુહાર."

આ વ્યુત્પત્તિ સાચી માનવા માટે એક તો 'હ'નો પ્રક્ષેપ સ્વીકારવો જોઈએ અને બીજું 'અ'નો કે 'એ'નો ઉકાર થયેલો છે એમ પણ માનવું જોઈએ. પહેલી બાબત તો ઉપર્યુક્ત પુસ્તકમાં સ્વીકારાઈ છે, કેમકે પ્રક્ષિપ્ત 'હ'નાં ઉદાહરણ તરીકે 'જુહાર'નો નિર્દેશ છે.[૨] આ સંબંધમાં મારું માનવું એ છે કે **જયકાર** એ પ્રતિસંસ્કૃત રૂપવાળા **જોક્કાર**માંથી **જુક્કાર-જુઆર-જુહાર** એમ શબ્દ ઉદ્ભવ્યો છે, કારણ કે એમ માનવામાં 'હ'ના પ્રક્ષેપ ઉપરાંતની બીજી બાબતો સ્વીકારવી પડતી નથી.

'**જોષકાર**'માંથી **જોહાર** શબ્દ કેવી રીતે ઉપજવાય તે **ધાટગેએ** સૂચવ્યું નથી એટલે એની કલ્પના કરવી રહી. એ કલ્પના એવી હોઈ શકે કે **જોષકાર-જોસકાર-જોહકાર-જોહઆર-જોહાર** એમ 'જોહાર' શબ્દ બને ખરો, પરંતુ **જોષકાર** એટલે શું ? સંસ્કૃતમાં 'સુખ' અર્થસૂચક **જોષ** શબ્દ છે. એ ઉપરથી 'સુખ કરનાર' એવો **જોષકાર**નો અર્થ થાય, પરંતુ તેમાંથી 'પ્રણામ' એવો અર્થ કેવી રીતે ઉપજવાય ?

ગુજરાતમાં ગુજરાતી બોલનારા હિન્દુઓ અને ખાસ કરીને જૈનો 'જુહાર' શબ્દ વાપરે છે. કેટલાયે જૈનો પરસ્પર પત્ર લખે ત્યારે 'જુહાર વાંચશોજી' એમ હજી પણ લખે છે. અને દશેક વર્ષ ઉપર તો લગભગ બધા જૈનો તેમ કરતા હતા. 'જુહાર' શબ્દ ગુજરાતી સાહિત્યમાં પણ વપરાયો છે. તાજેતર દાખલો જોઈએ તો **ઇન્દુલાલ ગાંધી**એ એનો પ્રયોગ કર્યો છે એ છે.

---

૧ આ ગ્રન્થની નોંધ (અવતરણ વિના) સચિત્ર અર્ધ-માગધી કોષ (ભા. ૨. પૃ. ૮૭૬) માં કરાયેલી છે. ત્યાં 'જોહાર' નો અર્થ 'સત્કાર કરવાને હાથ દેવો કે સામે સામે ભેટવું તે' અપાયો છે.

૨ અન્ય ઉદાહરણો તરીકે આકારયતિ-હક્કારઇ-હંકારે, તારણકાર-તારણઆર-તારણહાર, અદ્યાપિ-અજ્જવિ-હજી, પ્રાપ્ત-પત્ત-પહુત્ત-પહોંચ, વાગુરિઅ-વાઘુરિઅ-વાઘરી, **સકલ-સગલ-સઘળું** અને અગ્રે-અગ્ગે-આગે-આઘે એમ સાત **જૂની ગુજરાતી ભાષા** (પૃ. ૪૯)માં નોંધાયાં છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

એમનો જન્મ ઈ. સ. ૧૯૦૫ માં થયો છે. એમની પહેલાં થઈ ગયેલા સ્વ. **મણિલાલ નભુભાઈ દ્વિવેદી** (ઈ. સ. ૧૮૫૮–૧૯૯૮) એ પણ આ શબ્દ વાપર્યો છે એમ એમની કૃતિ **આત્મનિમજ્જન** (પૃ. ૩૧)માં 'અભેદ્યોર્મિ' કાવ્યગત પહેલી કડી જે "સાથે આવો તો સગપણ જાણીએ હોજી" છે તેની ત્રીજી પંક્તિ નામે "કરી જગત્ બધાને જુહાર રે" ઉપરથી જણાય છે.

કુલમંડનસૂરિએ વિ. સં. ૧૪૫૦ માં રચેલ **મુગ્ધાવબોધ ઔક્તિક**માંના ઔક્તિક પદમાં '**जुहारु नमस्कारः**' એવો જે ઉલ્લેખ છે તેમાં **जुहार** શબ્દ છે અને આડકતરી રીતે એ 'દેશ્ય' શબ્દ હોવાનું સૂચન મળે છે.

વિ. સં. ૧૫૬૮ માં **લાવણ્યસમય** ગણિએ રચેલા **વિમલપ્રબંધ** (ખંડ ૪, કડી ૪૦, પૃ. ૧૨૧)માં નીચે લખેલી પંક્તિમાં 'જુહાર' શબ્દ વપરાયેલો છે:—

"પહિલું સરસતિ કરિઉ જુહાર, કરિ કવિઉ એકાઉલિહાર."

વિ. સં. ૧૭૩૮ માં રાંદેરમાં ચોમાસું રહી ઉપાધ્યાય **વિનયવિજયગણિએ** જે **શ્રીપાલ રાજાનો રાસ** રચ્યો છે તેના પહેલા ખંડની છઠ્ઠી ઢાલની દસમી કડીમાં 'જુહારવું' શબ્દ વાપર્યો છે. પ્રસ્તુત પંક્તિ નીચે મુજબ છે:

"આવો દેવ જુહારીએં રે લો, **ઋષભદેવ** પ્રાસાદ રે."

તીર્થવંદના યાને **સકલતીર્થવંદન**ના નામથી સુપ્રસિદ્ધ અને દૈવસિક પ્રતિક્રમણ સૂત્રમાં પ્રસિદ્ધ થયેલ કૃતિમાં એના કર્તા **જીવ** (વિજયે) બે વાર 'જુહાર' શબ્દ વાપર્યો છે.[૧] આ કૃતિ સો વર્ષ જેટલી તો પ્રાચીન હશે જ એમ લાગે છે. 'પર્વ પર્યુષણ ગુણનીલો' એ ચૈત્યવંદનમાં 'જિનવર ચૈત્ય જુહારીએ' એવો પાઠ છે.

'જુહાર' શબ્દ ગુજરાતીમાં નામ તેમજ ક્રિયાપદ તરીકે વપરાય છે એટલું જ નહિ પણ 'જુહારપટોળાં' એ શબ્દ પણ વપરાય છે. એનો અર્થ 'બેસતા વર્ષે આશીર્વાદ લેવા જુહાર કરવા તે' એવો થાય છે.

જોહર

સાર્થ ગુજરાતી જોડણીકોશ (ત્રીજી આવૃત્તિ)માં 'જોહર' શબ્દના બે અર્થો આપ્યા છે: (૧) ઝવેરાત અને (૨) સામુદાયિક આત્મહત્યા. બીજો અર્થ આપતી વેળા એના પર્યાય તરીકે 'જમોર' શબ્દ આપેલો છે. વિશેષમાં 'જમોર'નો અર્થ સૂચવતી વેળા 'જમોર કરનાર' એ અર્થવાળો 'જમોરિયો' શબ્દ અપાયો છે. પ્રા. **બળવંતરાય ક. ઠાકોરે** 'એક તોડેલી ડાળ'માં 'જોહર' શબ્દ વાપર્યો છે. પ્રસ્તુત પંક્તિ નીચે પ્રમાણે છે.

"થયો જ્યાં ડંકો જોહર ઢિલ કરે રાજપુત કે?"

ઉપર્યુક્ત કાવ્ય **આપણી કવિતા સમૃદ્ધિ**માં ૫૦મી સમૃદ્ધિ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયેલું છે અને એના ઉપર પ્રા. ઠાકોરે જાતે વિવરણ રચ્યું છે. એમાં એમણે નીચે મુજબ ઉલ્લેખ કર્યો છે:—

---

૧ આની છેલ્લી કડીમાં 'જીવ કહે ભવસાયર તરું' એવું કથન છે એ ઉપરથી **સજ્જનસન્મિત્ર**ની ઈ. સ. ૧૬૪૧ ની આવૃત્તિમાં એના કર્તાનું નામ **જીવવિજય** સૂચવાયું છે અને એ આધારે મેં પણ આ નામ અહીં નોંધ્યું છે.

પ્રસ્તુત પંક્તિઓ નીચે મુજબ છે:—

"ત્રણ લાખ એકાણું હજાર ત્રણસેં વીશ તે બિંબ જુહાર."

"વિમલાચલ ને ગઢ ગિરનાર આબુ ઉપર જિનવર જુહાર,"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"જૈહરનો ડંકો યુદ્ધ દરમિયાન તેમાંના સૈનિકોને માટે જ અને છેલ્લો મારીને મરવાનો ધસારો કરવા માટેનો, તે જ કેસરિયાંનો ડંકો. અહીં મારે એ શબ્દ ખોટો કહેનારા ન. ભો. દી. અને કે. હ. ધ્રુ. જેવા પ્રોફેસરોએ પોતે સાચા જ હોવા જોઈએ એ વલણમાં જરા મંદ પડી મને પૂછ્યું હોત, તો હું એમને કહી શકત—આ તો ઉપમા જ છે. જેવી રીતે જૈહરનો આદેશ કે નિર્ણય થતાં કોઈ પણ સૈનિક આગળ ધાયા વિના ન રહે, તેવી રીતે...આવી તો એ બેય આચાર્યોએ 'ભણુકાર' ભણાવતાં બે ચાર ભૂલો કરેલી."

રજપૂત રાજાઓ કેસરિયાં કરતાં અને તેમનું મરણ થતાં તેમની સ્ત્રીઓ જૈહર કરી બળી મરતી.

ઈ. સ. ના સોળમા સૈકામાં થઈ ગયેલા **મુહમ્મદ કાસિમ ફિરિશ્તહ** દ્વારા રચાયેલ **તારિખ-ઈ-ફિરિશ્તહ** (પ્રકરણ ૨)માં 'જૈહર' શબ્દ વપરાયેલો છે. એ શબ્દ પાઇય 'જઉહર' અને સંસ્કૃત **જતુગૃહ** સાથે સંબંધ ધરાવે છે. **જતુગૃહ** ઉપરથી **જઉહર-જૌહર** એમ બની શકે છે અને એનો અર્થ 'લાખનું ઘર' એમ થાય છે. **જૂની ગુજરાતી ભાષા** (પૃ. ૩૭)માં "**જૌહર**=જતુગૃહ" એવો ઉલ્લેખ છે તે આ હકીકતનું સમર્થન કરે છે.

મુહમ્મદ કાસિમના ઉપર્યુક્ત ફારસી ગ્રંથના **જોન બ્રિગ્સે** કરેલા અંગ્રેજી અનુવાદ નામે "History of the Rise of the Mahomeden Power in India, till the year A. D. 1612." (Vol. II, p. 231)માં નીચે મુજબ ઉલ્લેખ છે—

"The spirit of the beseiged fell with their governor; and in their despair, they performed the ceremony of the Jowhur, and putting their wives and children to death, burned them with corpse of their chief on a funeral pile."

पंजाबमें जैनधर्म

लेखकः—**पूज्य पंन्यासजी महाराज श्रीसमुद्रविजयजी गणि**
[पू. आ. म. श्री. विजयवल्लभसूरीश्वरप्रशिष्य]

पंचनदीय (पंजाब) देशमें जैनधर्म पूर्व कालसे ही चला आ रहा है इतना ही नहीं किन्तु गौरवशाली भी रहा है। पंजाबमें भगवान श्री जिनेश्वर देवों के मंदिर और उन मंदिरों के माननेवाले थे, इसकी साक्षी पंजाब के ज्ञानभंडार दे रहे हैं। हाल में जंडियालागुरु, जि० अमृतसरमें पूज्यपाद परम गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री शिवविजयजी श्रीपार्श्वनाथजी भगवानके मंदिरजीके ज्ञानभंडारका लिष्ट—फेरीस्त—तैयार कर रहे हैं। इस भंडारमें लाहोर, अमृतसर, कसूर, रामनगर, पपनाखा, साढौरा आदि और सिंध देशके कोहाट, अटकदुर्ग आदि नगरों में लिखे हुए हस्तलिखित पुस्तक मौजूद हैं।

आजकल जहां जैनोंकी आबादी तो क्या, किन्तु कसम खानेके लिए एक भी जैन नहीं है, यानी जैनका नाम मात्र भी नहीं है, ऐसे वजीराबाद आदि नगरों में लिखे हुए पुस्तक और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्रित किये हुए चित्रपट्ट मिल रहे हैं, नमूनेकी तौर पर **वजीराबाद** में सं. १७१० (सतारह सो दश) के ज्येष्ठ मासमें धन्नराज्यऋषि के शिष्य विद्याऋषिका चितरा हुआ एक चित्रपट्ट (कपडेका) आठ फूट लंबा और तीन फूट दो इंच चौडा मिला है।

इस पट्टमें मनुष्यकार चौदह राजलोक एवं उसके पर सिद्धशीला—मोक्षस्थान और अढाई द्वीप एवं उसके बाहर रहते हुए पशुओंके चित्र और सात नरकें एवं जिस जिस नरकमें परमाधामी जिस जिस प्रकार वेदना भोगवाते हैं और नरकके जीव भोगते हैं एवं जिन जिन कर्मों के प्रभावसे, जिन जिन नरकोंमें जीव जाता है उन सबके हूबहू चित्र खिंचे हैं, मेरु पर्वत, भुवनपति, व्याणव्यंतर, ज्योतिष और वैमानिक इन चारों प्रकारके देवों और देवियों के चित्र तथा चरम शासनपति श्रमण भगवान श्री वर्धमानस्वामीजीकी परमशांत मूर्त्ति और साधुओंका आलेखन किया हुआ है।

यह पट्ट दो सो नवें (२९०) वर्षोंका पुराणा हो जानेसे जीर्णशीर्ण हो गया है, और पट्टका रंग फिका पडजाने पर भी उसमें चितरे हुए चित्र फीके रंगमें भी आबाद हैं और देखनेवालोंके दिलों को बहलादेते हैं।

इस पट्ट के नीचे जो लेख लिखा है वह अक्षरशः यहां उद्धृत कर देता हूं जिससे आपको स्वतः पता लग जायेगा—

" इति श्री अढाइदीप. अढाइदीप बहार पसु तिर्यंच सहति. सातनारकी प्रमाधर्म्मी समेरु सहति. विमाणवासी देवदेवी सहति. श्रीवर्धमान तीर्थंकर साध सहति. लोकाकार मोक्ष सहति. इति आर्थ समाप्तं, अथ संवत १७९० वर्षे ज्येष्टदिने बजीराबाद नगरें धन्नराज्यऋषि तस्य सिसं लिखतं विधियाऋषि आत्मार्थे श्रीमद् वीरदेवनमस्कार भवेत्. शुभं भवतु।

अब हमें देखना यह है कि सं. १७१० में वजीराबादमें जैन थे और वे भी मूर्त्तिपूजक। यदि मूर्तिपूजक न होते तो इस चित्रपट्ट में श्रमण भगवान श्री वर्धमानस्वामीजी की मूर्ति और हाथमें मुंहपत्ती रखे हुए साधुओंकी मूर्तियें हरगीज न होती। इस चित्रपट्ट में भगवान की और मुंहपत्ती हाथमें रखे हुए साधुओं की मूर्त्तियोंका होना यही निर्विवाद सिद्ध कर रहा है कि पंजाब में पहेले मूर्त्तिपूजक जैन ही थे। तब ही तो सीयालकोट जैसे शहरमें भी श्री तीर्थंकरदेवका मंदिर था। इसके सबूतके लिए सं. १७०९ के कार्त्तिक कृष्ण एकादशी रविवारके दिन हंसराजगणि के शिष्य ऋषि सुकेशवरचित सीयालकोटमंडन श्री पार्श्वनाथ भगवान का छंद—स्तवन—मिल आया है। इस छंद—स्तवन—की इक्कीस २१ गाथायें हैं, इन गाथाओंमें प्रभु श्री पार्श्वनाथजी के पांचों कल्याणकोंका वर्णन और भगवान के गणधर एवं साधु, साध्वी, श्रावक श्राविकाओंकी संख्यादिका खूबीसे वर्णन किया है। अंतमें कलस इस प्रकार गाया है—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" सब संघस्वामी मुक्तिगामी, मनह कामी दायगो,
संवत ग्रह अरु शत सतारह, मास कातिग नायगो ।
तमपक्ष रवि दिन रुद्रतिथि गिन, सालकोटपुरमंडणो,
हंसराज गणि–शिष ऋषि **सुकेशव** स्तव्यो वामानंदणो ॥ "

इति श्री पार्श्वजिन स्तवनम् ।

(यहां स्तवन संपूर्ण उद्धृत कर देता, किन्तु लेख बढ जाने के भयसे उद्धृत न कर सका) देखिये **सालकोटपुरमंडणो** ये शब्द ही स्तवः सिद्ध कर रहे हैं कि १७०९ में सीयालकोट शहरमें श्री पार्श्वनाथस्वामीजी का मंदिर था, यदि मंदिर न होता तो कवि ये शब्द सालकोटपुरमंडणो कैसे और क्यों लिखता ? जब मंदिर था तो मंदिर मानने वाले भी थे, इसमें संदेह ही क्या है ?

संसार परिवर्त्तनशील है, इसमें परिवर्त्तन हुआ ही करते हैं, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं । यह तो स्पष्ट हो चुका है कि पंजाबमें पहेले श्री जिनेश्वरदेव के मंदिर और मंदिर के मानने वाले–देव पूजा के उपासक जैन ही थे, किन्तु भवितव्यतावशात् समय ऐसा आ पहुंचा कि अवनति के मोजोंने, मंदिर, देवपूजा, आदि सद्धर्म का अभावसा कर दिया। पतन के बाद फिर उत्थान होता ही है, इसी नियम मुजब इस विसमी सदि में फिर उत्थान की जबरदस्त लहरें आईं, जिससे देवमंदिर–देवपूजादि सद्धर्मका जोरोंसे प्रचार हुआ, लोग अपने सद्धर्ममें मजबूत हो गये । इन उत्थान की लहरोंके लानेवाले परम सद्गुरुदेव श्री बुद्धिविजयजी महाराज और आपके शिष्यरत्न न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वर(आत्माराम)जी महाराज थे । आपकी ही कृपासे पंजाबमें आज श्री जिनेश्वर देवोंके गगनचुम्बी भव्य शिखरबद्ध मंदिरों पर सोनेके चमकते हुए कलश एवं लहराती हुई ध्वजायें जैनधर्मको देदीप्यमान कर रही हैं और हजारों नर–नारियें मुक्तकंठसे आपके किये उपकारों को याद कर करके गुणानुवाद गा रहे हैं ।

बडी खुशी की बात है कि आपके बाद आपके ही पट्टधर परमगुरुदेव श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराजने आपके उत्थान को यानी सद्धर्म के प्रचार को ज्ञानमंदिर–देवमंदिर बनवाकर आगे बढाया, सीयालकोट जैसे शहरमें जहां साधुओंको पांव रखने का स्थान मिलाना मुश्किल था वहां भी चातुर्मास करके, श्री ऋषभ, चंद्रानन, वारीषेण और श्री वर्धमान इन श्री चार शाश्वते जिनेश्वरदेवों का चौमुखा शौधशोखी भव्य जिनमंदिर निर्माण करवाया जो देखने के काबिल है ।

प्रसंगोपात्त काश्मीर जाने वाले सद्गृहस्थों को सूचित करना जरूरी है कि काश्मीर जाते हुए वजीराबाद और जम्मुशहरके बिचमें सीयालकोट शहर आता है, स्टेशन परसे ही मंदिरजी नजर आता है । अतः एक टाईम उतर कर जरूर मंदिरजी के दर्शन कर लाभ उठावे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

યોગ-પાવડી

સંગ્રાહકઃ-પૂજ્ય મુનિમહારાજ શ્રીપદ્મવિજયજી [પૂ.આ.મ. શ્રી વિજયલબ્ધિસૂરીશ્વરશિષ્ય]

ઈડરના 'શ્રી આત્મ-કમલ-લબ્ધિસૂરિ શાસ્ત્રસંગ્રહ'માંથી "યોગ-પાવડી" નામની ત્રણ પાનાંની એક નાની પ્રત મલી આવી છે.

તેના અંતે—"ઇતિ યોગ-પાવડી સંપૂર્ણ. સકલપંડિતસભાભામિનીભાલસ્થલ-તિલકાયમાન પંડિતશ્રી પ. શ્રી સુમતિવિજયગણિશિષ્ય મુનિ રામવિજયેન લિખિતં, સંવત ૧૭૬૨ વર્ષે આશ્વિન સુદિ ૬ દિને શનિશ્ચરે ઋષિ હર્ષજી વાચનાર્થે"—એ પ્રમાણે લખેલ છે. લૌકિક બાવા યોગી વગેરેમાં વપરાતી જૂની ગુજરાતી અને અશુદ્ધ હિન્દી મિશ્ર ભાષા જણાય છે. તેની કડી ૬૮ છે. તેના કર્તા **ગરીબગિરિ** જણાવેલ છે. પણ વચનો જૈનેતરોમાં પ્રસિદ્ધ "ગોરખ" યોગીનાં જણાય છે. વિષય-યોગી કેવા હોય તથા તેની રહેણી કરણી કેવી હોય તેના વર્ણનનો છે. પ્રાચીન જૈન મહર્ષિઓએ અથાગ પરિશ્રમ વેઠી જગતના હિતેને માટે રચેલા આના કરતાં પણ ઉચ્ચ કોટિના ઘણા ગ્રન્થો જૈન જ્ઞાન-ભંડારોમાં હાલ પણ મોજૂદ છે. છતાં નવીનપ્રીય જનતાને સાધારણ વસ્તુ પણ જુદા લેબાસમાં દૃષ્ટિ આગળ આવતાં વાંચવાનું મન થાય છે, તેમ ધારી તથા કોઈપણ કારણથી પૂર્વકાલીન એક જૈન મુનિવરે સંગ્રહ યોગ્ય જાણી સ્વહસ્તે લખેલ હોવાથી તેમાંની કેટલીક કડીઓને જેમની તેમ અહીં ઉધ્ધૃત કરવામાં આવે છે. આનો અર્થ સુલભ છે.

(રાગ—કેદારો-ઢાળ ઉલાળાની.)

ક્રોધ લોભ દૂરઈ પરિહરણા, પરિહરવી મમતા માયા;
ગોરખ ઈશા ઉપદેશ્યા, કણયરીયા બુઝવાયા.
ગબક[1] ન બોલણા ધબક[2] ન ચલણા, જોઇ મુકવા પાયા;
દેશ વિદેશ ઇસી પરિ ભમણા, ભણતઇ ગોરખ રાયા.
માને પુત્તા! મ ધરિસ માનં, અપમાને નહિ ખેદં;
ગીતગાનનેં કાંન ન દેણા, મુક્તિ મારગ એ વેદં.
મીઠા મધુરા આહાર ન લેણા, સરવ રતિ પરિહરણા;
ઇંદ્રી પોષ કદા નહુ કરવા, એ મારગ તુજ તરવા.
ગીલા[3] સૂકા હરિત મ ચુંટે, બહુ મત પીજે આપં[4];
બહુ અપરાધ કર્યાથી પૂતા! મનમં ધરિસે સંતાપં.
પર નિંદ્યા તું મ કરિસ બાબા! મ કરિસ આપ વખાણું;
ઇશ્યા રોધ કરે તો પૂતા! જ્યોગ એહ પરમાણું.
છાની વાત ન કરણી પૂતા! કિસિકે કાનુ ન લાગી;
વાટ ચાલંતા વાત ન કરણા, જો હોઈ વૈરાગી.
પીપલ વડ હેઠિં નહુ રહણા, ન ન કરણી ઉંહાં વાસ્યાં;
ઉસકે બીજ ચંપાઈ પૂતા! સબહી સરીખી આસ્યા.

---

૧ ગબગબ્યા. ૨ ધબધબ્યા. ૩ લીલા. ૪ પાણી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

દેખી જોગ ઈંદ્રી બલ કરસ્યઈં, તુજકું નરગ પડાસેં;
યોગ લેઈ નઈ મન નહું રૂંધિસ, તો પછિં પછતાસે.
જો ડંબર[૫] કરસી તોહી મરસી, ડંબ[૫]કાં દુરગતિ હોસી;
એક જ પિંડ પોસેવા કારણિ, કાહેં યોગ વિગોવઈં.
દેખે પૂતા ! દિનકી કરણી, ઉગ્યા ઉર[૬] આથમીયા;
યોગ લેઈ કુછુ સાધન ન કીયા, તો આલસ ભવ ગમીઆ.
પરવ મહોચ્છવ આસ ન કરણી, ન હુ ખાંણી મીઠાઈ;
ઉસથી મન વાંકડલા હોસી, જાસી જોગ ઠકુરાઈ.
અરસવિરસ નઈ અલક સમલકસ , પેટ ભરી નહું ખાણા;
દેખ ભાડા કાયા કેં તાઈ, જિઉં ન હોવિ ઉપણી[૮].
સ્નાન દાનન્યેં એહું[૯] કરણા, જ્ઞાન ધ્યાન મનિ ધરણા;
એંસા યોગ ધરઈ તો યોગી, જિઉં ન હોવિ આવાગમણા.
મનમલ છાંડઇ સોઈ સ્નાનં, જીવ રાખે[૧૦] સોઈ દાનં;
જ્ઞાન તરસ અભ્યંતર ધરણા, નિર્વિષય તે ધ્યાનઈં.
કરણી કથણી જબ એક જ હોસ્યેં, તબ પામીસ કૈલાસં;
કરણી કથણી જુદાં પડસ્યેં, એ તો યોગ વિણાસઈં.
જોગી હોઈં તો રાતિ ન ખાવઈં, દિવસેં નિંદ્ર ન કરણી;
કપડા મહી કદા નહું ધરણી, એહી યોગ આચરણી.
યતી યોગી કા તબહી ચલણા, જબ હોવઈં રાહા ચલતા:
સૂરજ કરણુઈં[૧૧] સબ કછુ દીસઈં, જોગી ભલા સો ફિરતા.
પૂતા ! કિસીકી આસ ન કરણી, આસ ઘણી જગદીસા;
આસ છોડી ભએ ઉદાસી, સબ જગ ઉસકા દાસા.
કાંહે પૂતા ! જટા વધારે, કાંહઈં ભસ્મ લગાવેં;
તબ તાંઇ તુજ મુક્તિ ન હોઇ, જબ સમભાવ ન હોઈ.
વયરી વલ્લભ જબ સમ દેખીસ, સોવણુ તરણુ સમાનં;
દીનાનાથ મુખ દેખ લાવય, એહું બ્રહ્મજ્ઞાનં.
સાપ પરિશ્રમથી ત્રાસે, નરક પારજો.....;
સાકનીની પરિ સુંદરીસુ અલગો, યોગી એહું ધન્ય ધન્ય.
જોગી હોઇ સો જુગતેં બોલઈં, પુંઠિમંસ[૧૨] નહું ખાવઈં;
આગલેકા બહુત ગુણ દેખીનઈં, આપઈં ઓછા નાવેં.

---

૫ આડંબર. ૬ અને ૭ અસ્તમસમાન લેખ. ૮ આપણી. ૯ આવી રીતે કે આગળની કડીમાં કહેવાશે. ૧૦ જીવરક્ષા. ૧૧ કિરણોથી. ૧૨ નિંદા-ચાડી ચુગલી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

વડઈ તખતે[૧૩] ચ્યારિ દિન રહણા, એક દિન રહણા ગામઈં;
હજ્જર હાથ વસતીથી દૂરેં, રહિણા કરેં આરામઈં.
મંતતંત નહી જડી ન બૂટી, અઘોરમંત નહુ કરણા;
કિસકેં ઉપરિ સોસ નહુ ધરણા, એંસા યોગ આચરણા.
પૂતા ! પઢનેસઈં સબ ગુણ જાણઈં, મૂરખ કછુ ન બૂજઈં;
આંધેકું આદરશ દેખાવઈ, સામા ભલા નહુ સૂજઈ.
દોએ ધરમ[૧૪] દુનીયામેં પૂતા, આસી એક નિરાસી;
સો[૧૫] એ નરા નિજ મત રંજઈ, નીત પઢણ અભ્યાસી.
દૂજા ધરમ[૧૬] આસીકા કહાવે, આપણા ગુણ દેખલાવે;
દૂજેકે સબહી ગુણ લુંપઇ, સોએ વિરૂઈ ગતિ પાવઈ.
જેહ ઘર રહઈ કોએ દુખ પાવઈ, યોગી ઉહાં[૧૭] ન રહવઈ;
પ્રાણિંજતે[૧૮] જૂઠ ન બોલેં, સાચા હોઈ સો કહવઈ.
ભાંગ અફીમ અમલ ન હુ ખાવઈ, રહવઇ એકેં ધ્યાનેં;
આહાર નિદ્રા અલ્પ કરીને, રમઈ સો બ્રહ્મજ્ઞાનઈ.
ચેલા સો એ જે ચિત્તઈં ચાલેં, મનિ ચાલેં સો એ મીતા;
કહણી રહણી સરીખા ગુરુ જિહાં, સંસાર સરવ તિણ જીત્યા.
ભલા કીયા તો બહુ સુખ પાવઇ, દુખ પાવઈં બહુ પાપઈં;
ભોગવ કરણી આપસ આપસકી, કયા ચલેં માઈ ન બાપે.
એંસા દેખી કરિ જોગી હોણા, રહિણા એકઈં ધ્યાનઈં;
ભીતર ઉજલા ફટક તણી પરેં, રમણા બ્રહ્મજ્ઞાનેં.
મન મોહ ઓર ઈંદ્રી જિહ્વા, એ ચ્યારૂં ઠોર રહિવઈં;
પાકો દિલ પકડીનેં રાખેં, સો એ પરમ પદ પાવેં.
પેટ પિડિ પરતીત[૧૯] ન આવઈં, આગલેકું સમજાવે;
ઓરનકું વિકુંઠે બોલ્યાવેં, આપે યમપુરિ જાવેં.
જોગ જુગતિ ગમાવી પૂત્તા ! તું કયું સદગતિ પાવઈ;
મુંડમુંડાવેઇ ફરસેં ફોકટ, કાં જાડા ઘાસ ગમાવે[૨૦].
પ્યાર કરી કોઇ ભીક્ષા દેવઈં, યોગી બોહોત ન લેવે;
ગોસ પોષિ જોગી નહુ બેંસઈ, જયોગી જંગલ સેવેં.
યતી યોગી કાપંડી સન્નાસી, એણઈં રાહઈં જે ચાલઈં;
ગુરૂકા દાસ **ગરીબગિરિ** બોલઈ, સો એ પરમપદ પાવેં.

---

૧૩ મોટા શહેરમાં. ૧૪ બે પ્રકારના માણસો. ૧૫ નિરાશી. ૧૬ પ્રકાર. ૧૭ ત્યાં. ૧૮ પ્રાણ જાય તો પણ. ૧૯ પોતાના પેટની પીડાને જાણે. ૨૦ અર્થાત્ પશુથી હલકી ગતિ થશે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિનો

સં. ૧૯૯૭-૧૯૯૮ અને ૧૯૯૯ નો

ત્રણ વર્ષનો હિસાબ

શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિનો વિ. સં. ૧૯૯૦-૯૧ થી વિ. સં. ૧૯૯૬ સુધીનાં સવા પાંચ વર્ષનો હિસાબ વિ. સં. ૧૯૯૭ની સાલમાં 'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ' માસિકના ક્રમાંક ૬૮-૬૯માં પ્રગટ કરવામાં આવ્યો હતો. ત્યાર પછીનાં ત્રણ વર્ષ-સં. ૧૯૯૭-૧૯૯૮ અને ૧૯૯૯નો હિસાબ અહીં રજુ કરવામાં આવે છે.

આ ત્રણ વર્ષ એ યુદ્ધકાળનાં ત્રણ વર્ષ હતાં અને તેમાં કાગળના ભાવો મૂળ ભાવથી વધીને બમણા ચારગણા અને છેક આઠગણા સુધી વધી જવા પામ્યા હતા. અત્યારે પણ લગભગ છગણા ભાવ તો છે જ. વળી આ ત્રણ વર્ષ દરમ્યાન સં. ૧૯૯૮ની સાલમાં તો ૨૫૦ પાનાંનો દળદાર અને સચિત્ર દ્વીપોત્સવી અંક પણ પ્રગટ કરવામાં આવ્યો હતો. એટલે એકંદરે ખર્ચ વધુ પ્રમાણમાં થાય એ સ્વાભાવિક છે.

પણ 'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ' દિવસે દિવસે શ્રીસંઘમાં વધુ પ્રિય થતું જાય છે અને ખાસ કરીને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ આદિ શ્રમણ સમુદાયની મમતા અને કૃપાદૃષ્ટિ એના ઉપર વધતી જ રહી છે તેથી આવી અસહ્ય મોંઘવારીમાં પણ તે પોતાની મજલ કાપતું રહ્યું છે અને આજે નવમા વર્ષમાં પ્રવેશ કરી ક્રમાંક ૧૦૦મો 'વિક્રમ-વિશેષાંક' તરીકે દળદાર અને સચિત્ર અંક પ્રગટ કરવા સમર્થ થઇ શકયું છે.

આ માટે અમે પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ આદિ સમસ્ત મુનિસમુદાયનો તેમજ ઉદારતા પૂર્વક સમિતિને પ્રેમભરી મદદ મોકલનાર સંઘો અને સદ્ગૃહસ્થોનો અંતઃકરણ પૂર્વક આભાર માનીએ છીએ, અને સદાને માટે તેઓની આવી કૃપાદૃષ્ટિ બની રહે એવી શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કરીએ છીએ.

—વ્યવસ્થાપક.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રી જૈનધર્મ સત્ય પ્રકાશક સમિતિનો સંવત્ ૧૯૯૭-૧૯૯૮-૧૯૯૯ નો ત્રણ વર્ષનો હિસાબ

જ

૮૪૩૮-૩-૩ શ્રી નિભાવ ફંડ ખાતે

૪૭૧-૧૫-૩ સંવત્ ૧૯૯૬ ની બાકી.

૭૯૬૬-૪-૦ ત્રણ વર્ષમાં જુદા જુદા સદ્‌ગૃહસ્થો કે સંઘો તરફથી મળેલી મદદ. (જુઓ આ સાથેની યાદી.)

૮૪૩૮-૩-૩

૧૦૧૦-૧૦-૬ શ્રી લવાજમ ખાતે

ત્રણ વર્ષ દરમ્યાન 'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ' માસિકના લવાજમના આવ્યા તે.

૬૩-૧૨-૦ સમિતિના નીચે મુજબ દેવાના

૪૬-૮-૬ શ્રી નવસૌરાષ્ટ્ર કાર્યાલય ખાતે.

૩૪-૨-૦ શ્રી રામવિજય બાઇન્ડીંગ વર્કસ ખાતે,

૧૩-૧-૬ શ્રી ઉમેદચંદ રાયચંદ ખાતે.

૬૩-૧૨-૦

૧૦૫૪૨-૯-૯

ઉ

૭૬૮૯-૧૦-૬ શ્રી ખર્ચ ખાતે ત્રણ વર્ષના નીચે મુજબ

૨૭૬૦—૮-૬ કાગળ ખ. ખા.

૨૪૧૬—૦-૦ પગાર ખ. ખા.

૧૫૩૬-૧૪-૦ છપામણી ખ. ખા.

૩૦૬-૩-૦ ટપાલ ખ. ખા.

૩૦૩-૨-૦ બાઇન્ડીંગ ખ. ખા.

૭૬—૬-૬ પરચુરણ ખ. ખા.

૭૨-૧૪-૦ માસિક વહેંચામણી ખ. ખા.

૪૮-૧૪-૦ મુસાફરી ખ. ખા.

૩૮-૮-૩ સ્ટેશનરી ખ. ખા.

૩૪-૧૫-૬ કમીશન ખ. ખા.

૩૩-૧૩-૬ બ્લોકચિત્ર ખ. ખા.

૧૫—૪-૦ પુસ્તક ખ. ખા.

૭-૦-૦ ડેડસ્ટોક ખ. ખા.

૭૬૮૬-૧૦-૬

૨૮૦-૦-૦ સમિતિના નીચે મુજબ લેણાના

૨૫૦-૦-૦ રતિલાલ દીપચંદ ટ્રેસાર્ષ ખાતે.

૩૦-૦-૦ નેમચંદ વાડીલાલ ખાતે

૨૮૦

૭૬૬૬-૧૦-૬

૨૫૭૨-૧૫-૩ વિ. સં. ૧૯૯૯ ના આસો વદિ ૦)) ના રોજ પુરાંત જણશે બાકી

૧૦૫૪૨-૯-૯

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

વિ. સં. ૧૯૯૭-૧૯૯૮-૧૯૯૯ ની સાલમાં

નિભાવ ફંડમાં મદદ આપનારાંની યાદી

૭૦૦) શેઠ જમનાભાઈ ભગુભાઈ અમદાવાદ
૫૦૧) ,, જગતચંદ્ર નેમચંદ પોપટલાલ વ્હોરા,,
૫૦૦) શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી ,,
૨૦૨) શેઠ ભગુભાઈ ચુનીલાલ સુતરીયા ,,
૨૦૦) શેઠ ચીમનલાલ લાલભાઈ ,,
૨૦૦) શ્રી જૈન વિદ્યાશાળા ,,
૧૫૧) શ્રી ડહેલાનો ઉપાશ્રય ,,
૧૩૪) શેઠ કેશવલાલ હેમચંદ નવાબ ,,
૧૨૬) શેઠ મુલાખીદાસ નાનચંદ
હ. શેઠ મૂલચંદભાઈ ખંભાત
૧૨૩) શેઠ પદમચંદજી સંપતલાલજી અમદા.
૧૦૨) શેઠ રતિલાલ વર્ધમાન, વઢવાણ કેમ્પ
૧૦૧) શેઠ હરજીભાઇ રાજજી માંગરોલ વાધરી
૧૦૧) શેઠ ગિરધરલાલ છોટાલાલ અમદાવાદ
૧૦૧) શેઠ મનુભાઈ લલ્લુભાઇ જેઠાલાલ ધડીયાળી અમદાવાદ
૧૦૦) શેઠ સૌભાગ્યચંદ ચુનીલાલ ,,
૧૦૦) શેઠ મોહનલાલ લલ્લુભાઇ કલકત્તાવાળા અમદાવાદ
૭૫) શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી વઢવાણ કેમ્પ
૫૫) શેઠ ડાહ્યાભાઈ મૂલચંદ શરાફ અમદાવાદ
૫૫) શેઠ રમણલાલ છોટાલાલ પરીખ ,,
૫૧) શેઠ ચંદુલાલ મુલાખીદાસ ,,
૫૧) શેઠ નાથાભાઇ ઝવેરચંદ લીંબેટ
૫૧) શેઠ ડાહ્યાભાઇ સાંકળચંદ અમદાવાદ
૫૧) શેઠ છગનલાલ લક્ષ્મીચંદ ,,
૫૧) શેઠ નેમચંદ પોપટલાલ વોરા ,,
૫૧) શ્રીમતી લક્ષ્મીબેન નેમચંદ વોરા ,,
૫૧) શેઠ જેશીંગભાઈ ઉગરચંદ ,,
૫૧) શેઠ ધોળીદાસ કુંવરશીભાઇ ,,
૫૧) શેઠ સુંદરલાલ મગનલાલ
હ. શ્રીમતો મંછાબેન અમદાવાદ
૫૧) શેઠ નરેન્દ્રભાઇ લાલભાઇ ,,
૫૧) શેઠ કાંતિલાલ ભોગીલાલ નાણાવટી ,,
૫૧) શ્રીમતી સુભદ્રાબેન ચીમનલાલ ,,
૫૧) શેઠ મોહનલાલ છોટાલાલ પાલખીવાલા ,,
૫૧) શેઠ સુબોધચંદ્ર પોપટલાલ ,,
૫૧) શેઠ રતિલાલ ગિરધરલાલ ,,
૫૧) શેઠ ચંદુલાલ તારાચંદ ઝવેરી ,,
૫૧) શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાભાઇ વકીલ ,,
૫૧) શેઠ માણેકલાલ જેશિંગભાઈ ,,
૫૧) શેઠ નગીનદાસ કીલાભાઈ ,,
૫૧) શેઠ નગીનદાસ બેચરદાસ
હ. શેઠ ચંદુલાલ ચુનીલાલ અમદાવાદ
૫૧) શેઠ રમણલાલ ધોલીદાસ પરસોત્તમદાસ અમદાવાદ
૫૧) શેઠ રમણલાલ લાલભાઇ ,,
૫૧) શેઠ અંબાલાલ છોટાલાલ ,,
૫૧) શેઠ ભોળાભાઇ જેશિંગભાઈ મુંબઈ
૫૧) શેઠ હીરાચંદ વસનજી રાજમંત્રી પોરબંદર
૫૧) શ્રી જૈન સંઘ વડાલી
૫૧) શ્રી જૈન સંઘ જાવાલ
૫૧) શેઠ ગુલાબચંદ દલસુખભાઈ ગાંધી લુણાવાડા
૫૧) શેઠ ધરમચંદ નાગરદાસ પરસોત્તમદાસ રાણપુર
૫૧) શેઠ હરિદાસ સૌભાગ્યચંદ વેરાવળ
૫૧) શેઠ પ્રેમચંદ ગોમાજી
હ. શેઠ ઉદયભાણજી મુંબઈ
૫૧) જીવણલાલ અમજીભાઈ
હ. શેઠ રતિલાલભાઇ વઢવાણ શહેર
૫૦) શ્રી તપગચ્છ જૈન સંઘ ફલોધી
૫૦) શ્રી ઉજમફઇની ધર્મશાળા અમદાવાદ
૫૦) શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી વઢવાણ શહેર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૫૦) શેઠ મણિલાલ માધવજી વડાલી
૪૦) શ્રી જૈનસંઘ નંદરબાર
૩૩) શેઠ ઈશ્વરદાસ મૂલચંદ અમદાવાદ
૩૩) શેઠ ચીનુભાઈ જસવંતલાલ અમદાવાદ
૩૩) શેઠ રતિલાલ કેશવલાલ અમદાવાદ
૩૩) શેઠ સોમાભાઇ મંગળદાસ અમદાવાદ
૩૩) શેઠ લાલભાઇ ઉમેદચંદ લઠ્ઠા અમદાવાદ
૩૩) શેઠ પ્રેમચંદ ચુનીલાલ લઠ્ઠા અમદાવાદ
૩૧) શેઠ પોપટલાલ પુંજાભાઈ અમદાવાદ
૩૧) શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ અમદાવાદ
૩૧) શ્રી જૈનસંઘ કમીટી ખીવાણદી
૩૦।। શ્રી જૈનપંચ મહાજન પોમાવા
૩૦) શ્રી જૈન જ્ઞાનશાળા વેરાવળ
૨૯) શ્રી જૈનસંઘ શિરપુર
૨૫) શ્રી વાસુપૂજ્યસ્વામી ટેંપલ ટ્રસ્ટ પુના
૨૫) શેઠ કાંતિલાલ લલ્લુભાઇ અમદાવાદ
૨૫) શેઠ પાનાચંદ વજલાલની પેઢી કપડવંજ
૨૫) શ્રી મહાવીર સ્વામીના દેરાસરનું જ્ઞાન-
ખાતુ અમદાવાદ
૨૫) શ્રી જૈનસંઘ પટ્ટી (પંજાબ)
૨૫) શ્રી હરજી જૈનશાળા જામનગર
૨૫) શ્રી જૈન શ્વેતાંબરસંઘ મંદસૌર
૨૫) શ્રી સ્તભતીર્થ તપગચ્છસંઘ ખંભાત
૨૫) શ્રી જૈનસંઘ ખીમેલ
૨૫) શેઠ સાકળચંદ ડુંગરશી ઇડર
૨૫) શ્રી જૈન શ્વેતાંબરસંઘ સીમાણા
૨૫) શેઠ ડાહ્યાભાઇ કપૂરચંદ અમદાવાદ
૨૫) શ્રી જૈન યુવક મંડળ વાપી
૨૫) શ્રી જૈન સાહિત્ય મંદિર પાલીતણા
૨૫) શ્રી જૈન શ્વેતાંબરસંઘ પિંડવાડા
૨૨) શેઠ હરખચંદજી અગરચંદજી અમદાવાદ
૨૨) શેઠ અમૃતલાલ મોહનલાલ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ કેશવલાલ લલ્લુભાઈ ઝવેરી અમદાવાદ
૨૨) શેઠ કેશવલાલ વીરચંદ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ પુંજાભાઇ દીપચંદ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ પ્રેમચંદ ગુલાબચંદ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ ડાહ્યાભાઈ રતનચંદ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ મોહકમભાઈ પરસોત્તમદાસ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ જેશિંગભાઈ હેમચંદ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ સકરચંદ દલસુખરામ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ મોહનલાલ હેમચંદ
હ. શેઠ કલ્યાણભાઈ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ પ્રતાપસિંહ મોહોલાલભાઈ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ રમણભાઇ સારાભાઈ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ બચુભાઈ નથ્થુભાઇ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ ભોગીલાલ વાડીલાલ અમદાવાદ
૨૨) શેઠ પુલચંદ છગનલાલ સલોત અમદાવાદ
૨૨) શેઠ જીવણલાલ મણિલાલ ભગુભાઈ
અમદાવાદ
૨૨) શ્રીશાહ ખાતે હા. શેઠ રમણભાઇ
અમદાવાદ
૨૨) શેઠ શાંતિલાલ રાયચંદ અમુલખ
વઢવાણ કેમ્પ
૨૨) શેઠ નગીનદાસ ગડમડદાસ છાણી
૨૨) શેઠ મહાસુખલાલ વીરચંદ ગોધરા
૨૨) શેઠ રતિલાલ ભીખાભાઈ મુંબઇ
૨૨) શેઠ પરસોત્તમદાસ નાનચંદ રાણપુર
૨૨) શેઠ તળશી જાદવજી
હ. શેઠ રતિલાલભાઈ વઢવાણ કેમ્પ
૨૧) શ્રી જૈનસંઘ વેરાવળ
૨૧) શ્રી જૈનશ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક સંઘ
પાલણપુર
૨૧) એક સદ્‌ગ્રહસ્થ હ. શેઠ કાંતિલાલ
અમદાવાદ
૨૦।। શેઠ ગુલાબચંદ મકનજી મારફત વાપી
૨૦) શેઠ મીઠાભાઈ કલ્યાણચંદનો ઉપાશ્રય
કપડવંજ
૧૫) શ્રી જૈન શ્વેતાંબરસંઘ ઇદોર
૧૫) શ્રી જૈનસંઘ સમસ્ત જાલોર
૧૫) શ્રી જૈનસંઘ વઢવાણ શહેર
૧૫) શ્રી જૈનસંઘ ગોંદિયા
૧૫) શેઠ કપૂરચંદ હીરાચંદ વલસાડ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૫) શેઠ મંગળદાસ ભોગીલાલ, અમદાવાદ
૧૫) શ્રી જૈનશ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક સંઘ પ્રાંતીજ
૧૫) શ્રી ગુલાબનો જૈન ઉપાશ્રય ગોધરા
૧૫) શ્રી જૈન મહાજન સમસ્ત શીપોર
૧૧) શેઠ વિજયસિંહજી કેસરીસિંહજી કોઠારી જયપુર
૧૧) શેઠ શકરાભાઈ રતનચંદ અમદાવાદ
૧૧) શેઠ ભગુભાઇ મોહનલાલ અમદાવાદ
૧૧) શેઠ ભોગીલાલ ત્રિકમલાલ સુતરીયા અમદાવાદ
૧૧) શેઠ રતિલાલ મંગળદાસ ગોધરા
૧૧) શેઠ રતિલાલ સુખલાલ નારીચાણીયા રાણપુર
૧૧) શ્રી જૈન શ્વેતાંબર સંઘ ધાનેરા
૧૧) શ્રી જૈનસંઘ નડિયાદ
૧૧) શેઠ સુંદરજી કલ્યાણજી વેરાવળ
૧૧) શેઠ હંસરાજ વસનજી વેરાવળ
૧૧) શેઠ હરખચંદ કપુરચંદ માસ્તર ,,
૧૧) શેઠ દલપતભાઇ ખુશાલચંદ ખંભાત
૧૧) શેઠ જયંતિલાલ મગનલાલ વઢવાણ કેમ્પ
૧૧) શેઠ મગનલાલ મનસુખલાલ ગોધરા
૧૧) શેઠ ત્રંબકલાલ છગનલાલ વઢવાણ કેમ્પ
૧૧) શેઠ છોટાલાલ નરસીદાસ દોસી ,, ,,
૧૧) શેઠ ચીમનલાલ નરસીદાસ ,, ,,
૧૧) શેઠ નરસીદાસ નથ્થુભાઈ વોરા ,, ,,
૧૧) શેઠ જેસીંગભાઇ કાલીદાસ વોરા અમદાવાદ
૧૧) શ્રીમતી મહાલક્ષ્મી બેન અમદાવાદ
૧૧) શેઠ દલસુખભાઇ ભગુભાઈ ,,
૧૧) શેઠ છોટાલાલ નાથાલાલ ભગત ,,
૧૧) શેઠ કેશવલાલ મગનલાલ
હ. શ્રીમતી ચંચળબેન અમદાવાદ
૧૧) શ્રીમતી દિવાળી બેન ,,
૧૧) શ્રીમતી જાસુદ બેન
શેઠ હરિભાઈ પ્રેમાભાઈ ,,
૧૧) શ્રીમતી ચંચળ બેન ,,
૧૧) શ્રીમતી જાસુદ બેન ,,
૧૧) શેઠ મયાભાઈ લક્ષ્મીચંદ અમદાવાદ
૧૧) શેઠ ચીમનલાલ લાલભાઈ ,,
૧૧) શેઠ જગભાઇ બાપાલાલ ,,
૧૧) શેઠ વાડીલાલ સાંકળચંદ ,,
૧૧) શેઠ શાંતિલાલ લાલચંદ ,,
૧૧) શેઠ જગાભાઈ જેશિંગભાઇ ,,
૧૧) શેઠ હરિલાલ છોટાલાલ
હ. શ્રીમતી રુક્ષ્મણી બેન ,,
૧૧) શેઠ ચંદુલાલ દલસુખરામ ,,
૧૧) શેઠ ભોગીલાલ ચુનીલાલ ,,
૧૧) શેઠ મણિલાલ વખતચંદ રાજકોટવાળા ,,
૧૧) શેઠ ચંદુલાલ મોહનલાલ ,,
૧૧) શેઠ મણિલાલ ડાહ્યાભાઈ ,,
૧૧) શેઠ શાંતિલાલ પરસોત્તમદાસ ઝવેરી ,,
૧૧) શેઠ જગાભાઈ ચંદુલાલ
હ. શ્રીમતી તારાબેન ,,
૧૧) શેઠ પરસોત્તમદાસ ચીમનલાલ ,,
૧૧) શેઠ અમૃતલાલ લલ્લુભાઈ ,,
૧૧) શ્રીમતી ચંપાબેન ,,
૧૧) શેઠ રતનચંદ ફતેચંદ ,,
૧૧) શેઠ ચીમનલાલ કેશવલાલ ,,
૧૧) શેઠ મોહનલાલ મહાસુખરામ ,,
૧૧) શ્રીમતી લીલીબેન ,,
૧૧) શેઠ હીરાભાઇ કરમચંદ ,,
૧૧) શ્રીમતી નારંગી બેન ,,
૧૧) શેઠ બબાભાઈ કેશવલાલ ઝવેરી ,,
૧૧) શેઠ કેશવલાલ ઘેલાભાઇ ,,
૧૧) શેઠ જગાભાઈ મોહનલાલ ,,
૧૧) શેઠ લાલચંદભાઇ હરજીવનદાસ ,,
૧૧) શેઠ કેશવલાલ તલકચંદ ,,
૧૧) શેઠ કાંતિલાલ વીરચંદ ,,
૧૧) શેઠ કેશવલાલ સવાઈભાઈ ,,
૧૧) શેઠ જેશિંગભાઈ રતનચંદ ,,
૧૧) શેઠ બબલદાસ વેણીચંદ ,,
૧૧) શેઠ કલ્યાણભાઇ અમૃતલાલ ,,
૧૧) શેઠ ડાહ્યાભાઈ ભગુભાઈ
હ. શ્રીમતી મંગુબેન ,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૧) શેઠ ત્રિકમલાલ પોપટલાલ	,,	૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	મ્હેસાણા
૧૧) શેઠ શકરચંદ મણીલાલ	,,	૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	લુણાવાડા
૧૧) શેઠ શાંતિલાલ ઓધવજભાઈ	,,	૧૦) શ્રી જૈન મહાજન	વિસનગર
૧૧) શેઠ પીતાંબરદાસ હકમચંદ	,,	૧૦) શેઠ શેરસિંહજી કોઠારી	કોટા
૧૧) શેઠ મંગળદાસ મનસુખરામ વકીલ	,,	૧૦) શ્રી જૈન શ્વેતાંબર સંઘ	ઇડર
૧૧) શેઠ કાળીદાસ ઉમાભાઇ	,,	૧૦) શ્રી જૈન સંઘ સમરત	સમી
૧૧) શેઠ કચરાભાઈ નાનચંદ વકીલ	ડભોડા	૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	જંબુસર
૧૧) શ્રી પંચ મહાજન	વાંકડીયા વડગામ	૫) શ્રીમતી વીજીબેન મહાસુખરામ	અમદાવાદ
૧૧) શેઠ ગિરધરલાલ ભોગીલાલ	અંગાડી	૫) શ્રી જૈન સંઘ	પ્રાંતીજ
૧૦) શ્રી ધર્મવિજય જૈન જ્ઞાનમંદિર	સમી	૫) શ્રી જૈન સંઘ	અહમનગર
૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	કપડવંજ	૫) શ્રી જૈન સંઘ	ધાણેરાવ
૧૦) શ્રી નેમુભાઇની વાડીનો સંઘ	સુરત	૫) શ્રી જૈન સંઘ	ગારિયાધાર
૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	તખતગઢ	૫) શ્રી જૈન સંઘ	ગોલા
૧૦) શેઠ ગુલાબચંદ રાયચંદ	વલસાડ	૪) શ્રી જૈન સંઘ	ગંભીરા
૧૦) શ્રી જૈન સંઘ	નવાડીસા	૧) શેઠ ખીમચંદ ત્રિભોવનદાસ	વઢવાણશહેર
૧૦) શ્રી વીસાદસાશ્રીમાળી બેનાત	માણસા	કુલ	૭૯૬૬-૪-૦

સમિતિના સહાયકોને

'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ' એ શ્રી શ્રમણપ્રધાન ચતુર્વિધ સંઘનું માસિક છે અને તેનો નિભાવ શ્રી સંઘની સહાયતા ઉપર જ થાય છે. સમિતિને સહાયતા મોકલવાની નીચે મુજબ યોજના નક્કી કરવામાં આવી છે-

૫૦૦) કે તેથી વધુ આપનારને સંરક્ષક (પેટ્રન) ગણવા.
૧૦૦) કે તેથી વધુ આપનારને દાતા (ડોનર) ગણવા.
૫૦) કે તેથી વધુ આપનારને સહાયક સભ્ય ગણવા.

[એકી સાથે ૫૦) ન આપતાં પાંચ વર્ષ માટે વાર્ષિક ૧૧) ની મદદ આપનારને પણ સહાયક સભ્ય ગણવામાં આવે છે.]

આ રીતે સમિતિને મદદ કરનારને 'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ' માસિક હમેશ માટે ભેટ આપવાનું નક્કી કરવામાં આવ્યું છે.

અને

૨) થી ૧૧) સુધીની મદદ મોકલનારને માસિક એક વર્ષ માટે ભેટ મોકલવામાં આવે છે.

૧૨) થી વધુ અને ૨૧) ઓછી મદદ મોકલનારને માસિક બે વર્ષ માટે ભેટ મોકલવામાં આવે છે.

૨૧) થી વધુ ૫૦) થી ઓછી મદદ મોકલનારને માસિક ત્રણ વર્ષ માટે ભેટ મોકલવામાં આવે છે.

સહાયકોને આની નોંધ લેવા વિનંતી છે.

—વ્યવસ્થાપક
શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિ
જેશિંગભાઇની વાડી, ઘીકાંટા-અમદાવાદ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સમાચાર

પ્રતિષ્ઠા—[૧] રાજકોટમાં ફાગણ શુદિ ૪ ના શેઠ છોટાલાલ હેમચંદ પાટણવાળાના દેરાસરની પ્રતિષ્ઠા તથા અંજનશલાકા પૂ. આ. મ. શ્રી વિજયપ્રેમસૂરીશ્વરજી તથા પૂ. આ. મ. શ્રી વિજયરામચંદ્રસૂરીશ્વરજીના હાથે કરવામાં આવી. [૨] ગોરકડામાં ફાગણ સુદિ ૩ ના પૂ. આ. મ. શ્રી વિજયમોદનસૂરીશ્વરજીના શિષ્ય પૂ. પં. શ્રી ધર્મવિજયજીના હાથે શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાન તથા શ્રીનેમિનાથ ભગવાનની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી. [૩] દાંતરાઈમાં ફાગણ શુદિ ૫ ના પૂ. આ. મ. શ્રી વિજયલક્ષ્મણસૂરિજીના હાથે શ્રી શીતલનાથ ભગવાનની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી.

દીક્ષા—[૧-૨] અમદાવાદમાં માગસર શુદિ ૫ ના પૂ. આ. મ. શ્રી વિજયસિદ્ધિસૂરીશ્વરજીએ મારવાડના ભાઇશ્રી લક્ષ્મીચંદજી તથા ભાઇશ્રી હરખચંદજીને દીક્ષા આપી. દીક્ષિતનાં નામ અનુક્રમે મુ. લાભવિજયજી અને ધર્મવિજયજી રાખીને તેમને અનુક્રમે પૂ. મુ. મ. શ્રી કંચનવિજયજીના તથા પૂ પં. શ્રી કલ્યાણવિજયજીના શિષ્ય બનાવવામાં આવ્યા. [૩] સુરતમાં માગસર વદિ ૧ ના પૂ. આ. મ શ્રી વિજયવિજ્ઞાનસૂરિજીએ ભાર્યશ્રી સુરવિન્દભાઇને દીક્ષા આપી. તેમનું નામ મુ. ચંદ્રોદયવિજયજી રાખીને તેમને પૂ. ઉ. મ. શ્રી કસ્તુરવિજયજીના શિષ્ય બનાવવામાં આવ્યા. [૪] સુરતમાં ફાગણ શુદિ ૫ ના પૂ. મુ. મ. શ્રી મૃગાંકવિજયજીએ ભાઇશ્રી કુલચંદભાઇને દીક્ષા આપી, તેમનું નામ મુ. ભદ્રાનંદવિજયજી રાખી પોતાના શિષ્ય બનાવ્યા. [૫] અમદાવાદમાં ફાગણ સુદિ ૫ ના પૂ. આ. મ. વિજયસિદ્ધિસૂરીશ્વરજીએ પાટણવાળા ભાઇશ્રી મફતલાલને દીક્ષા આપી દીક્ષિતનું નામ મુ ઋદ્ધિપ્રભવિજયજી રાખીને તેમને પૂ. મુ. મ. શ્રી રત્નાકરવિજયજીના શિષ્ય બનાવવામાં આવ્યા. [૬-૭] બોટાદમાં ફાગણ શુદિ ૨ ના પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજયામૃતસૂરિજીએ બે ભાઇઓને દીક્ષા આપી તેમનાં વિનીતપ્રભવિજયજી અને હીરપ્રભવિજયજી નામ રાખ્યાં. [૮] લુણાવાડામાં ફાગણ સુદિ ૨ ના પૂ. ઉ. મ. શ્રી. ભુવનવિજયજીએ નિષ્પાપીનિવાસી ભાઇ રમણલાલને દીક્ષા આપી. દીક્ષિતનું નામ મુ રત્નશેખરવિજયજી રાખીને તેમને પૂ. મુ. મ. શ્રી. સુદર્શનવિજયજીના શિષ્ય બનાવ્યા. [૯] વીસલપુરમાં ફાગણ શુદિ ૨ ના પૂ. પં. રંગવિમળજીએ બાવળી (પંજાબ) ના ભાર્યશ્રી ધર્મચંદ્રજી ગુપ્તાને દીક્ષા આપી. દીક્ષિતનું નામ મુ. ધીરવિમળજી રાખીને તેમને પૂ મુ. મ. શ્રી. કનકવિમળજીના શિષ્ય બનાવ્યા. [૧૦] સુરતમાં ફાગણ શુદિ ૧૨ ના ભાઈશ્રી વિનોદભાઇને દીક્ષા આપવામાં આવી. દીક્ષિતનું નામ મુ. બલભદ્રવિજયજી રાખીને તેમને પૂ.મુ.મ. શ્રી. જીતેન્દ્રવિજયજીના શિષ્ય બનાવવામાં આવ્યા. [૧૧] વડાવલીમાં ફાગણ શુદિ ૫ ના પૂ. આ. શ્રી વિજયમનહરસૂરિજીએ ભાઇશ્રી અંબાલાલ ઉગરચંદને દીક્ષા આપી. દીક્ષિતનું નામ મુ. સુમંગલવિજયજી રાખીને તેમને પૂ. મુ. મ. શ્રી. ભદ્રંકરવિજયજીના શિષ્ય બનાવવામાં આવ્યા. [૧૨] વરકાણામાં માગસર શુદિ ૧ ના પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજયલલિતસૂરિજીએ જંબૂસરવાળા ભાઇશ્રી સુરેન્દ્રભાઈ તથા બીજા એક ભાઈને દીક્ષા આપી દીક્ષિતોનાં નામ અનુક્રમે મુ. જનકવિજયજી તથા જયંતવિજયજી રાખવામાં આવ્યાં.

કાળધર્મ—[૧] સુરતમાં પોસ સુદિ ૭ ને રવિવારના બપોરના ૩॥ વાગે વયોવૃદ્ધ પૂ. મુ. મ. શ્રી ઋદ્ધિવિજયજી ૮૫ વર્ષની ઉમ્મરે કાળધર્મ પામ્યા. [૨] મહુવામાં માહ શુદિ ૭ ની રાત્રે પૂ. મુ. મ. શ્રી. દુર્લભવિજયજી (ખેડાવાળા) તપસ્વી કાળધર્મ પામ્યા. [૩] વલ્લાદમાં માહ શુદિ ૧૨ ના પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજયવલ્લભસૂરીશ્વરજીના શિષ્ય પૂ. મુ. મ. શ્રી વિવેકવિજયજી કાળધર્મ પામ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

દરેકે વસાવવા યોગ્ય

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશના ચાર વિશેષાંકો

(૧) શ્રી મહાવીર નિર્વાણ વિશેષાંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામીના જીવન સંબધી અનેક લેખોથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય છ આના (ટપાલખર્ચનો એક આનો વધુ).

(૨) શ્રી પર્યુષણ પર્વ વિશેષાંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામી પછીનાં ૧૦૦૦ વર્ષના જૈન ઇતિહાસને લગતા લેખોથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય એક રૂપિયો.

(૩) દીપોત્સવી અંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામી પછીનાં ૧૦૦૦ વર્ષ પછીનાં સાતસો વર્ષના જૈન ઇતિહાસને લગતા લેખોથી સમૃદ્ધ સચિત્ર અંક: મૂલ્ય સવા રૂપિયો.

(૪) ક્રમાંક ૧૦૦ : વિક્રમ–વિશેષાંક

સમ્રાટ્ વિક્રમાદિત્ય સંબંધી ઐતિહાસિક ભિન્નભિન્ન લેખોથી સમૃદ્ધ ૨૪૦ પાનાંનો દળદાર સચિત્ર અંક: મૂલ્ય દોઢ રૂપિયો.

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશના બે વિશિષ્ટ અંકો

[૧] ક્રમાંક ૪૩–જૈનદર્શનમાં માંસાહાર હોવાના આક્ષેપોના જવાબરૂપ લેખોથી સમૃદ્ધ અંક: મૂલ્ય ચાર આના.

[૨] ક્રમાંક ૪૫–ક. સ. શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યના જીવન સંબંધી અનેક લેખોથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય ત્રણ આના.

કાચી તથા પાકી ફાઇલો

'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ'ની ત્રીજા, ચોથા, પાંચમા, સાતમા, આઠમા વર્ષની કાચી તથા પાકી ફાઇલો તૈયાર છે. મૂલ્ય દરેકનું કાચીના બે રૂપિયા, પાકીના અઢી રૂપિયા.

ભગવાન મહાવીરસ્વામીનું ત્રિરંગી ચિત્ર

ગુજરાતના સુપ્રસિદ્ધ ચિત્રકાર શ્રી કનુભાઈ દેસાઇએ દોરેલું સુંદર ચિત્ર. ૧૦"×૧૪"ની સાઇઝ, સોનેરી બોર્ડર. મૂલ્ય ચાર આના (ટપાલ ખર્ચનો દોઢ આનો).

—લખો—

શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિ
જેશિંગભાઈની વાડી, ઘીકાંટા, અમદાવાદ.

For Private And Personal Use Only